JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE

Karma, Jhumri Telaiya, Dist.- Koderma- 825 409
(Affiliated to Vinoba Bhave University, Hazaribag)

Mob.. 8084375517
6204939110

Ref No .....

Date 25.01.2023

प्रेस बिज्ञप्ति

आज दिनांक 25/01/2023 दिन बुधवार अपराह्न एक बजे से चार बजे तक झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज, करमा में प्रो. सोहर यादव (प्राचार्य) की अध्यक्षता में अर्थशास्त्र विभाग की और से एक सेमिनार आयोजित की गई, जिसमे सेमिनार का विषय " पूंजीवाद में आर्थिकविकास " था।

सेमिनार में विद्यार्थियों एंव उपस्थित शिक्षक अपना – अपना विचार व्यक्त किए। सेमिनार में विद्यार्थियों का काफी जोश देखा गया। विद्यार्थी विषय वस्तु पर शिक्षको का विचार काफी गौर से सुना एवं अपना विचार भी काफी खुलकर रखा। विद्यार्थी अपनी जिज्ञासा भी प्रश्न पूछकर कर शांत किया, एवं आगे होनेवाले सेमिनार में भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लेने के लिए आतुर दिखाई दिए।

सेमिनार में उपस्थित शिक्षक प्रो. अशोक कुमार स्वर्णकार, प्रो. किशोरी साव, प्रो.कैलाश राणा, प्रो. युगल साव, प्रो. रामेश्वर प्रसाद राणा, प्रो. श्याम किशोर ठाकुर, प्रो. नुरलल्हा अंसारी, प्रो. जगदीश प्रसाद, प्रो. डॉ. अरुण कुमार सिंह, प्रो. आरती कुमारी, प्रो. सुनील कुमार, एंव शिक्षकेतर कर्मचारी सर्व श्री किशोर पासवान, कुलेश्वर प्रसाद यादव, अनीता कुमारी, त्रिभुवन ठाकुर, संजय कुमार शर्मा, अनूप कुमार सिन्हा उपस्थित थे।

25 01 - 2023

प्राचार्य

दैनिक भास्कर रांची 29 जनवरी 2025

कॉमर्स कॉलेज में पूंजीवाद में आर्थिक विकास पर पूछे प्रश्न

सेमिनार में मौजूद प्राचार्य व अन्य ।

कोडरमा.। झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज में अर्थशास्त्र विभाग की ओर से पूंजीवाद में आर्थिक विकास विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। मौके पर विद्यार्थियों व शिक्षकों ने अपने अपने विचार व्यक्त किए। सेमिनार में विषय वस्तु प्रशिक्षकों के विचारों को विद्यार्थियों ने गौर से सुना और अपनी विचार भी खुलकर रखे। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने प्रश्न पूछे, जिसे शिक्षकों ने जवान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. सोहर यादव ने कहा कि इस सेमिनार से बच्चो ने वस्तु स्थिति की जानकारी मिलती वहीं उसकी बौद्धिक विकास होता है। मौके पर शिक्षक प्रो. अशोक कुमार स्वर्णकार, प्रो. किशोरी साव, प्रो. कैलाश राणा, प्रो. युगल साव, प्रो. रामेश्वर प्रसाद राणा, प्रो. श्यामकिशोर ठाकुर, प्रो. नुरूउल्लाह अंसारी, प्रो. जगदीश प्रसाद, प्रो. डा. अरूण कुमार सिंह, प्रो. आरती कुमारी, प्रो. सुनिल कुमार के अलावा शिक्षकेतर कर्मचारी व अन्य लोग मौजूद थे।

जरूरत बताई।

Hindustan 29/9/2023

कॉलेज में सेमिनार का आयोजन

कोडरमा। कॉमर्स कॉलेज करमा में प्राचार्य प्रो. सोहर यादव की अध्यक्षता में अर्थशास्त्र विभाग के तत्वावधान में पूंजीवाद में आर्थिक विकास पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस मौके पर छात्रों व शिक्षकों ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये। सेमिनार में छात्रों ने इस विषय पर जहां अपने विचार प्रस्तुत किए तो शिक्षकों से भी इस विषय पर कई प्रश्न पूछकर अपने जिज्ञासा को शांत किया।

सेमिनार में प्रो. अशोक कुमार स्वर्णकार, प्रो. किशोरी साव, प्रो. कैलाश राणा, प्रो. युगल साव, प्रो. रामेश्वर प्रसाद राणा, प्रो. श्याम किशोर ठाकुर, प्रो. नुरउल्ला अंसारी, प्रो. जगदीश प्रसाद, प्रो. डॉ. अरूण कुमार सिंह आदि मौजूद थे।

आदर्श प्लसट ने

का
पाण्डेय ग
PHO

जिले के सरकार
स्थानान्तरण

विभागीय
विद्यालयों में कार्यरत
विवरणी अपलोड क
आपत्ति आमंत्रित
lohardaga.nic.
PR 288492 Lohar

दर्द
घुटने

आज दिनांक 25/01/2023 दिन बुधवार अपराह्न 1 बजे से अर्थशास्त्र विभाग की ओर से एक सेमिनार का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता प्राचार्य प्रो० कोमर यादव जी ने किया।

आज के सेमिनार का विषय "पूंजीवाद में आर्थिक विकास" है।

सेमिनार में उपस्थित शिक्षक - शिक्षकेत्तर कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का हस्ताक्षर :-

(1) प्रो० अशोक कुमार
(2) किशोरी साव
(3) प्रो० कैलाश राणा
(4) प्रो० युगल साव
(5) प्रो० रमेश प्रसाद राणा
(6) प्रो० कुमार कौशल
(7) Nurallah Ansari
(8) जगदीश प्रसाद
(9) Dr. Arun Kr. Singh
(10) प्रो० आरती कुमारी
(11) Rama Shankar Lal
(12) भुवन ठाकुर
(13) Anita Kumari
(14) Kuleshwar Pd Yadav 25.01.23
(15) दिलीप राम
(16) Ritesh Pandey
(17) सोनू रजक
(18) Sanjeev Yadav
(19) Anup Kumar Sinha
(20) संजय कुमार शर्मा
(21) SONU PANDEY
(22) Bhola Yadav
23. Sunil Kumar
24 Md Altaf Khan
25 Md Adnan Khan

25/01/23
विभागाध्यक्ष

25-01-2023
प्राचार्य
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

P.T.O.

26 किशोर कुमार पासवान

27. Faizan Quraishi

28 ROUSHAN KUMAR

29 Tulsi saw

30. Anil Kumar Saw

31. Rohit Yadav

32. कैशरुन खातुन

33. उमेश कुमार

34. Pramod Yadav

35. Rinku Kumari

36. Amisha Kumari

37. Varsha Kumari

38, Laxmi Kumari

39. Sumita Kumari

40. Shweta kumari

41. Kajal Praveen

42. Sushma Kri

43. Khushboo kumari

44. Sabiya Anjum

45. Neha Singh

46 Ayush kumar sharma

47. Govind Rama

48. Ramesh Verma

49. Ayush Kumar

50.

आज दिनांक 05 दिसम्बर 2023 दिन मंगलवार अपराह्न 2 बजे से महाविद्यालय कमरा नं० 02 में अर्थशास्त्र विभाग की ओर से एक सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का विषय वस्तु - " भारत के आर्थिक विकास में श्रमशक्ति का महत्व" था।

सेमिनार की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य प्रो० सोहर माइव एवं मंच संचालन विभाग के अध्यक्ष प्रो० अशोक कुमार खेमुर द्वारा किया गया। सेमिनार में शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने अपना-अपना विचार व्यक्त किए। अपराह्न 5 बजे धन्यवाद ज्ञापन के बाद सेमिनार समाप्त करने की घोषणा प्राचार्य महोदय द्वारा की गई।

05/12/23
विभागाध्यक्ष

5-12-2023
प्राचार्य
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

शिक्षकों का हस्ताक्षर :-

	Name	Dept.	Sign
1	Sunil Kumar	Geography	
2	मुगल साव	Dept History	
3	Nurullah Azmi	Urdu depart.	
4	Jeeblal Rana	English	
5	Arti Kumari	HOME SC	
6.	श्याम किशोर (हिन्दी)	हिन्दी	
7.	जगदीश प्रसाद	Commerce	
8.	Dr. Gandhi prasad Diwakar	Sociology	
9.	Arbind Kumar Sinha	Deptt of Pol. Science	
10.	Dr. Arun Kr. Singh	Deptt. of Eng.	05/12/23
11.	Rameshwar Pd. Rana	Deptt Pol. Sc	
12.			

P.T.O

08 दिसम्बर/2023 सेमिनार का फोटो एवं समाचार दैनिक जागरण में हुआ :-

भारत के आर्थिक विकास में श्रमशक्ति का महत्व विषय पर हुआ सेमिनार

कामर्स कालेज में आयोजित सेमिनार में उपस्थित शिक्षकगण • जागरण

संवाद सहयोगी, झुमरीतिलैया (कोडरमा) : कामर्स कॉलेज में अर्थशास्त्र विभाग की ओर से सेमिनार का आयोजन किया गया। इसका विषय भारत के आर्थिक विकास में श्रमशक्ति का महत्व रहा। सेमिनार की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. सोहर यादव एवं मंच संचालन विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक कुमार स्वर्णकार ने किया।

सेमिनार में महाविद्यालय के शिक्षक एवं छात्र-छात्राओं ने विचार प्रस्तुत किए। इसमें भाग लेने वाले शिक्षकों में प्रो. कैलाश राणा, प्रो. रामेश्वर राणा, प्रो. अरविंद सिन्हा, प्रो. सुनील कुमार, प्रो. नुरुल्ला अंसारी, प्रो. श्याम किशोर ठाकुर, प्रो. युगल साव, प्रो. आरती कुमारी, प्रो. जिवलाल राणा, प्रो. अरुण कुमार सिंह एवं प्रो. गांधी प्रसाद दिवाकर शामिल थे। वहीं सेमिनार में 80 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया और श्वेता कुमारी, ललिता कुमारी, काजल कुमारी, लक्ष्मी कुमारी, सुनीता कुमारी, सुफिया अंजुम, आयुष कुमार शर्मा, प्रकाश आदि थे।

कागज पर चल रहा विद्युत विभाग कार्यालय

संवाद सूत्र, लातेहार : लातेहार विद्युत विभाग के पदाधिकारियों ने झारखंड सरकार को अपनी रिपोर्ट भेजकर लातेहार जिला भर में विद्युतीकरण का कार्य पूर्ण बता दिया है, मगर जमीनी हकीकत कुछ और ही है। लातेहार जिला के कई ग्रामीण इलाकों में आजादी के बाद से नवनिर्मित सरयू प्रखंड के पुरंको डंबरी गांव के खैराही टोला में आज तक बिजली नहीं पहुंची है। विद्युत विभाग का कार्य सिर्फ कागज पर ही सीमित रह गया है। जिससे विद्युत विभाग के पदाधिकारियों पर आक्रोश व्यक्त है। गुरुवार को पुरांको डंबरी गांव में आयोजित महिला समूहों ने बैठककर गांव में बिजली का मुद्दा उठाया गया। इसके साथ ही डीसी से मिलकर विभाग के कारनामों की जानकारी देने का निर्णय लिया गया। इसके साथ ही बिजली विभाग का घेराव पर सहमति प्रदान की गई। ग्रामीणों ने कहा कि विद्युत विभाग के पदाधिकारियों के कारण आज गांव के लोग अंधेरे में है। बच्चों को पढ़ाई व खेती करने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

शहर 30S

विधायक ने पानी टंकी की रखी आधारशिला

जयनगर। प्रखंड के नईटांड में जल-नल योजना से बनने वाली पानी टंकी की आधारशिला विधायक अमित कुमार यादव ने गुरुवार को रखी। इस मौके पर विधायक अमित यादव ने कहा कि यह केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना है। इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को शुद्ध पेयजल आपूर्ति होना है। उन्होंने केंद्र सरकार द्वारा चलाए जा रहे कई योजनाओं के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए आम लोगों को योजना का लाभ लेने की अपील की।

मुख्यमंत्री के ढिबरा पर दिए बयान का स्वागत

झुमरी तिलैया। झारखंड प्रदेश कांग्रेस सचिव मनोज सहाय पिंकू ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के पिछले पांच दिसंबर को कोडरमा आगमन पर अभ्रक उद्योग और ढिबरा व्यवसाय को लेकर दिए बयान का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में ढिबरा उद्योग को पुनर्जीवित करने मंत्री कृषि पशुपालन बादल पत्रलेख, जिला प्रभारी मंत्री बन्ना गुप्ता के सहयोग से को-ऑपरेटिव सोसायटी के जरिए पटरी पर लाने का काम किया जा रहा था।

'देश के आर्थिक विकास में श्रम शक्ति महत्वपूर्ण'

कोडरमा। झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज करमा में भारत की आर्थिक विकास श्रम शक्ति के महत्व पर सेमिनार का आयोजन किया गया। अध्यक्षता कॉलेज के प्राचार्य सोहर यादव और संचालन विभागाध्यक्ष प्रो. अशोक कुमार स्वर्णकार ने किया। इ मौके पर प्रो. कैलाश राणा, प्रो. रामेश्वर प्रसाद राणा, प्रो. अरविन्द सिन्हा, प्रो. सुनील कुमार आदि ने अपने विचार रखे।

बिजली कॉलेजमें फाइन आर्ट्स पर कार्यशाला

08/दिसम्बर/2023 सेमिनार का समाचार दैनिक हिंदुस्तान में हुआ

JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE

Karma, Jhumri Telaiya, Dist.- Koderma- 825 409

(Affiliated to Vinoba Bhave University, Hazaribag)

Mob.: 8084375517
6204939110

Ref. No. .....

Date 05/12/23

झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज में सेमिनार का आयोजन

आज दिनांक 05/दिसम्बर/2023दिन मंगलवार अपराहन 2 बजे से 5 बजे तक अर्थशास्त्र विभाग की ओर से झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज के कमरा सं०-02 में एक सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसका विषय "भारत के आर्थिक विकास में श्रमशक्ति का महत्व" था । सेमिनार की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य प्रो० सोहर यादव एवं मंच संचालन विभागध्यक्ष प्रो० अशोक कुमार स्वर्णकार द्वारा किया गया । सेमिनार में महाविद्यालय के शिक्षक एवं छात्र-छात्रा उपस्थित होकर अपना -अपना विचार प्रस्तुत किए । सेमिनार में भाग लेने वाले शिक्षको में प्रो० कैलाश राणा, प्रो० रामेश्वर प्र० राणा, प्रो० अरबिन्द सिन्हा, प्रो० सुनील कुमार, प्रो० नुरूल्ला अंसारी, प्रो० श्याम किशोर ठाकुर, प्रो० युगल साव, प्रो० आरती कुमारी, प्रो० जिवलाल राणा, डा० अरुण कुमार सिंह एवं डा० गाँधी प्रसाद दिवाकर उपस्थित थे । लगभग 80 छात्र-छात्रायें सेमिनार में हिस्सा लिया एवं स्वेता कुमारी, ललिता कुमारी, काजल कुमारी,लक्ष्मी कुमारी,सुनीता कुमारी, सुफिया अंजुम, आयुष कुमार शर्मा, प्रकाश कुमार, राकेश कुमार, इत्यादि अपना-अपना विचार प्रस्तुत किए ।

5/12/23
H.O.D
Deptt. of Eco.

6.12.2023
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

विद्यार्थियों का हस्ताक्षर :-

(1) Laxmi kumari
(2) Smita kumari
(3) Shweta kumari
(4) Kajal Praveen
(5) Sushma Kumari
(6) Khushboo Kumari
(7) Sufiya Anjum
(8) Varsha Kumari
(9) Ayush Kumar Sharma
(10) Govind Ram
(11) Ramesh verma
(12) Ayush kumar
(13) Pinku Kumari
14. Amisha Kumari
15. Pramod Yadav
16. [illegible]
17. Ravindra kumar
18. Puja Kumari
19. Anju Kumari
20. Kajal Kumari
21. Deepak Yadav
22 Satyanand Jadav
23 Vikash Yadav
24. Mukesh Jadav
25. Atikul Rahman.
26. Rinku Saw
27 Soni kumari
28 Shivshankar yadav
29 Ravi Kumar.
30. Sachin Kumar
31 Rajlakshmi jyoti
32. Samridhi Raj
33. Sarita kumari

P.T.O

34 Neha Singh
35 Anshu Bharti
36 Soni kumari
37 Sanjay Pandit
38) Aman kumar Yadav
39. Puja Kumari
40) sulochna kumari
41) Nishu kumari
42) Puja kumari
43) Md altaf khan
44) Shamim Khan
45 Sristee Sonam
46 Reekumar Jadav
47 Abhijeet Prasad
48 Ankit Kr- Jadav
49. Sangita kumari
50. [illegible]
51 Gaurav kumar
52 [illegible]
53 [illegible] Kumar
54 vivek kr. yadav
55 Aman kumar
56 Deepak Kumar
57- Kartik kumar
58 - PAPPU kumar
59 Anjum kumari
60 - Sandeep Kumar
61 - Roshan kumar sau
62 - Rupa kumari
63 - Bipul Kumar
64- Ashish Kumar
65 Binod Thakur
66 Suraj kumar [illegible]
67 Suraj kumar sau
68 Sandeep kumar.

69 Anisha kumari
70 Gunjan kumari
71 Ranjana chakrawarti
72 md. Soohal khan
73 [illegible] Kumar
73 Amit [illegible]
74 Rohit kumar gupta
72) NIKKU KUMAR Verma
73) Vipul Kumar.
74) Raj Kumar.
75) Pradyuman kumar
76) Arvind Kumar

प्रतिवेदन

दिनांक 17/05/023 को राजनीति शास्त्र विभाग की ओर से "नई शिक्षा नीति" पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्राचार्य प्रो० सोहर यादव जी द्वारा किया गया। संगोष्ठी का संचालन प्रो० अरविन्द कुमार सिन्हा ने किया जबकि धन्यवाद ज्ञापन प्रो० नुरुल्लाह अंसारी ने किया। संगोष्ठी में मंच पर उपस्थित प्रो० अशोक कुमार प्रभाकर, प्रो० रवीश्वर प्र० राणा, प्रो० मदन कुमार राणा, प्रो० सुरेश प्र० यादव, प्रो० युगल साव, प्रो० गिरिधारी साव, प्रो० आरती कुमारी, प्रो० सुनील कुमार, प्रो० अरुण कुमार सिंह, प्रो० अनिल कुमार ने छात्र एवं छात्राओं को सम्बोधित किया।

प्रो० अरविन्द कुमार सिन्हा
" रवीश्वर राणा
राजनीतिशास्त्र विभाग

संगोष्ठी "दिनांक :- 17/05/023

विषय :- "नई शिक्षा नीति"

कोडरमा में बुधवार को नई शिक्षा नीति पर आयोजित सेमिनार में मौजूद प्राचार्य समेत अन्य शिक्षक। हिन्दुस्तान

नई शिक्षा नीति से छात्रों को मिलेगा लाभ

कोडरमा । कॉमर्स कॉलेज करमा में बुधवार को नई शिक्षा नीति 2020 पर एक दिनी सेमिनार का आयोजन किया गया। राजनीति विभाग की ओर से आयोजित सेमिनार की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. सोहर यादव ने किया। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीतिसे छात्रों को कई प्रकार के लाभ मिलेंगे। संचालन प्रो. अरविन्द कुमार सिन्हा और धन्यवाद ज्ञापन प्रो..नुरुउल्ला अंसारी ने किया। इस दौरान प्रो. अशोक कुमार स्वर्णकार, प्रो. रामेश्वर प्रसाद राणा आदि मौजूद थे।

जयनगर पुलिस ने दो को भेजा जेल

जयनगर। जयनगर पुलिस ने दो अलग-अलग मामलों में दो लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। इसमें जयनगर हरिजन मुहल्ला निवासी शेखर रविदास (पिता दुखी दास) को जयनगर स्थित अपने आवास से महुआ शराब बेचने के आरोप में गिरफ्तार किया है। जबकि जयनगर में अभियुक्त बरही थाना क्षेत्र के बैरीसाल निवासी मिथुन कुमार दास (पिता बालेश्वर दास) को गिरफ्तार किया है।

क्रमांक	नाम	रोल नं०	वर्ग	मो.नं.
	Rakhi Kumari	127	II	9905992855
2	अभिलाषा कुमारी	124	II	9741995290
3	Ashish Kr. Paswan	840	II	7061576209
4	Prem Kumar Modi	724	II	9142855056
5	Jitendra Kumar yadav	642	II	9523966197
6	Deepak Singh	723	II	7857889540
7	Nikita Kumari	04	II	7979719896
8	LUCKY KUMAR	05	II	6207804398
9	Mukesh yadav	449	II	9470954737
10	Saurabh Kumar	783	II	7633012555
11	Ankit Kumar	710	II	9334683520
12	Anju Kumari	947	III	9934587513
13	Sapna Kumari	791	II	8235572093
14	Jaya Kumari	871	II	7667067185
15	Neha Kumari	916	II	7367986149
16	Shivani Kumari	806	II	7563063003
17	Mamta Kumari	306	II	7368913427
18	Kavita Kumari	731	II	8102737056
19	Kusum Kumari	245	II	9341312091
20	Rupali Kumari	834	II	9798649694
21	Anshu Bharti	954	IVth	9934621718
22	Neha Singh	953	IVth	6205117663
23	Nandita Kumari	936	IVth	6207044748
24	Kusum Kumari	761	IVth	9162292982
25	Shivani Soni	13	IVth	7488560770
26	Sangana Soni	24	IVth	6202284516
27	Arun Kr. yadav	167	4th	9508037770
28	Sonu Nigam	316	II	7479478085
29	Sajjad Ansari	276	II	9508295087
30	Arun Kr. Sharma	208	IV	9341286195
31	Nishant Kumar	525	II	9334737274
32	Sumit Kumar	527	II	7645828093
33	Pankaj Kumar	528	II	7974628571
34	Suman Kumar	526	II	6203705378
35	Pankaj Kr Thakur	1118	II	9955041691
36	Sumit Kumar	478	III	8104356388
37	Sagar Kumar Das	76	IInd	9934616059
38	Anuj Sharma	15	IInd	8809373044
39	Kumari Preeti	550	IVth	7461877919
40	Kumari Suman	548	IVth	8252553802
41	Kumari Neelam	551	IVth	9431788280
42	Babli Kumari	253	IInd	9334007001
43	Kumar Ashutosh	99	IInd	9905118603

उपस्थित शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का हस्ताक्षर

1	अशोक कुमार [signature]	[illegible] विभाग
2	प्रो० किशोरी लाल	इतिहास विभाग
3	सुरेश प्रसाद यादव	अर्थशास्त्र विभाग
4	Prof. Dr. Arun Kr. Singh	English
5	Sunil Kumar	Geography
6	Amit Kumar	Commerce
7	Prof. Yugal Saw	History
8	[signature]	Commerce
9	[illegible]	Head Assistant
10	[illegible]	
11	Abdullah An.	Urdu dept.
12	[illegible]	
13	[illegible]	
14	[illegible]	[illegible]
15	[illegible]	[signature]
16	[illegible]	[signature]
17	Arti Kumari	
18	Anup Kumar [illegible]	[signature]
19	Baidyanath yadav	[signature]
20	VIJAY DAS	Vijay Das
21	Madan Kr Rana	[signature]
22	[illegible]	[illegible]
23	[illegible]	[signature] 2023

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Importance of English

Peacock
Page No
Date : / /

Today, on 12th December, 2023 from 2:00pm a Seminar was organised by the English Department in room number 02 of the College. The Subject matter of which was "The Importance of English".

The Seminar was precided over by the Principal of the College, Prof. Sohar yadav and the Stage was Conducted by Jeeblal Rana, Charman of English Department. In this Seminar Teachers and Students expressed their views on the topic. After the Vote of thanks at 03:00 PM, the closing announcement of the Seminar was made by the Principal of College, Sohar Yadav.

12-12-2023
Signature of ~~Teachers~~ Principal

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Chairman of
The Dept. of
English.

Jeeblal Rana
Dr. Arun Kr. Singh 12/12/23

Signature of Teachers.

S.N.	Name	Deptt.	Signature
1	Prof Kailash Rana	Eco	[signature]
2	" A.K. Swarnkar	"	[signature] 12/12/23
3	" Alind Kumar Sinha	Pol-science	[signature]
4	Prof Yugal Saw		Ysaw
5	Prof Arti Kumari	P.H.Sc	[signature] 12/12/23
6	Dr. G.P. Diwakar		[signature] 12.12.23
7	Prof. Kishori Saw	Deptt.-History	[signature] 12/12/23

Signature.......................

(6) Prof. Madan Kr Rana - Deptt of Psy

लोकसभा में सड़क तथा रेल सेवाओं का निरंतर विस्तार किया जा रहा है।

कॉमर्स कॉलेज में सेमिनार का आयोजन

कोडरमा। झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज झुमरी तिलैया में मंगलवार को अंग्रेजी के महत्व पर सेमिनार का आयोजन किया गया। अध्यक्षता प्राचार्य सोहर प्रसाद यादव ने की। इस दौरान शिक्षकों और छात्रों ने अंग्रेजी की महत्ता पर अपने-अपने विचों को रखा। प्राचार्य सोहर यादव ने भी आज की परिवेश में अंग्रेजी की महत्ता पर प्रकाश डाला। मौके पर प्रो. अरविंद सिन्हा, प्रो.युगल साव, प्रो. कैलाश राणा, प्रो.जीवलाल राणा, प्रो. एके स्वर्णकार आदि मौजूद थे।

गड़गी पंचायत के विहिप अध्यक्ष बने चेतन

Deptt. of English

S.N.	Name of student	Roll No.	Semester
1.	Saurabh Kumar	557	V
2.	Gopal kr. yadav	571	V
3.	Rohit yadav	344	V
4.	Sangita kumari	352	V
5.	Ankit-kr.- Jadav	755	V
6.	Rahul Kumar	948	V
7.	Rani Kumari	408	V
8.	Kashmiri Kumari	299	V
9.	Bipul Kumar	507	V
10.	Rupesh yadav	111	V
11.	Sagar. Kumar	931	V
12.	Upendra kumar Yadav	715	V
13.	Rahul yadav	367	V
14.	Sharvan Kumar	722	V
15.	Ajay Kumar	215	V
16.	Suraj Kumar Pandey	119	V
17.	SHUBHAM SHASHWAT	765	V
18.	Pyush Kumar	404	V
19.	Pankaj yadav	379	V
20.	Jitendra yadav	662	V
21.	Ajit kumar yadav	775	V
22.	Abhishek Kumar	430	V
23.	Shankar Sao	424	V
24.	Priyanka Kumari	229	Vth
25.	Vishal Kumar yadav	1001	Vth
26.	Vipul kumar Pandey	303	Vth
27.	Krishna yadav	682	Vth
28.	Vicky kumar	865	Vth
29.	Sachin Kumar	01	Vth
30.	Souhel khan	210	Vth
31.	Saurav Kumar Gupta	129	Vth
32.	Manjeet kr. pandit	974	Vth
33.	Manish kr. Verma	503	Vth

Signature.....................

Name	R. No.	Sem V
34. Priyanshu Gupta	464	Priyanshu Gupta
35. Sima Kumari	169	Sima Kumari
Arvind Kumar	188	Arvind Kumar
36. Sonu Yadav	832	Sonu Yadav
Shubhankar gupta	088	Shubhankar gupta
37.) Mantu Kumar	577	Mantu Kr. Vth
38 Sachin Kumar Singh	693	Sachin Kumar Singh V
39 Sandip Kumar Yadav	900	Sandip Kr. V
40 Anurag Kumar	20	Anurag Kr
41 RADHESHYAM KUMAR YADAV	88	Radheshyam
42 Shashi Kumar	332	Shashi Kumar
43) Md. Mohsin	456	Md. Mohsin
44) Aditya Raj	313	Aditya Raj
45.) Shankar Saw	474	Shankar Saw
46.) Abhishek Kr Yadav	430	Abhishek Kr Yadav
47.) Ashish Kr Paswan	67	Ashish Kr Paswan
48) Sidhu Kumar Yadav	304	Sidhu Kr Yadav
49) Rohit Kumar	537	Rohit Kumar

(50) Krishan Kumar	504	Krishan
(51) Rahul Kumar	505	Rahul
(52) Bipul Kum	507	Bipul
(53) Deepak Kum Das	463	Deepak Kumar Das

Seminar

LITERATURE

'Peacock'
Page No.
Date : / /

Today, on 24 January 2024 from 12:00 PM, a Seminar is organised by the English Department in room no. 02 of the College. The Topic of the Seminar is from the topic prescribed in the Syllabus." e.i 'Drama'.

The Seminar is precided over by the Principal of the College Prof. Sohar Yadav and the Stage was Conducted by Jeeblal Rane, Chairman of English Department. In this Seminar Teachers and Students expressed their Views on the Topic. After the vote of thanks at 1:00 PM, the closing announcement of the Seminar was made by the Principal of the College Sohar Yadav.

Jeeblal Rane
Chairman of English Dept.

[signature] 24-1-24

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Signature of Teachers

01. [signature] 24.01.24
02. [signature]
03. [signature]
04. [signature] 24/01/24
05. [signature]
06. [signature] 24/1/24
07. [signature] 24.01.24
08. [signature] 24/01/24
09. [signature]
10. [signature] 24/.1/24
11.

s Signature........................

करमा (कोडरमा)
विभागीय संगोष्ठी
GPS Map Camera
Karma, Jharkhand, India
CHR2+4CG, Karma, Jhumri Telaiya, Jharkhand 825409, India
Lat 24.440032°
Long 85.550962°
12/12/23 01:30 PM GMT +05:30
Google

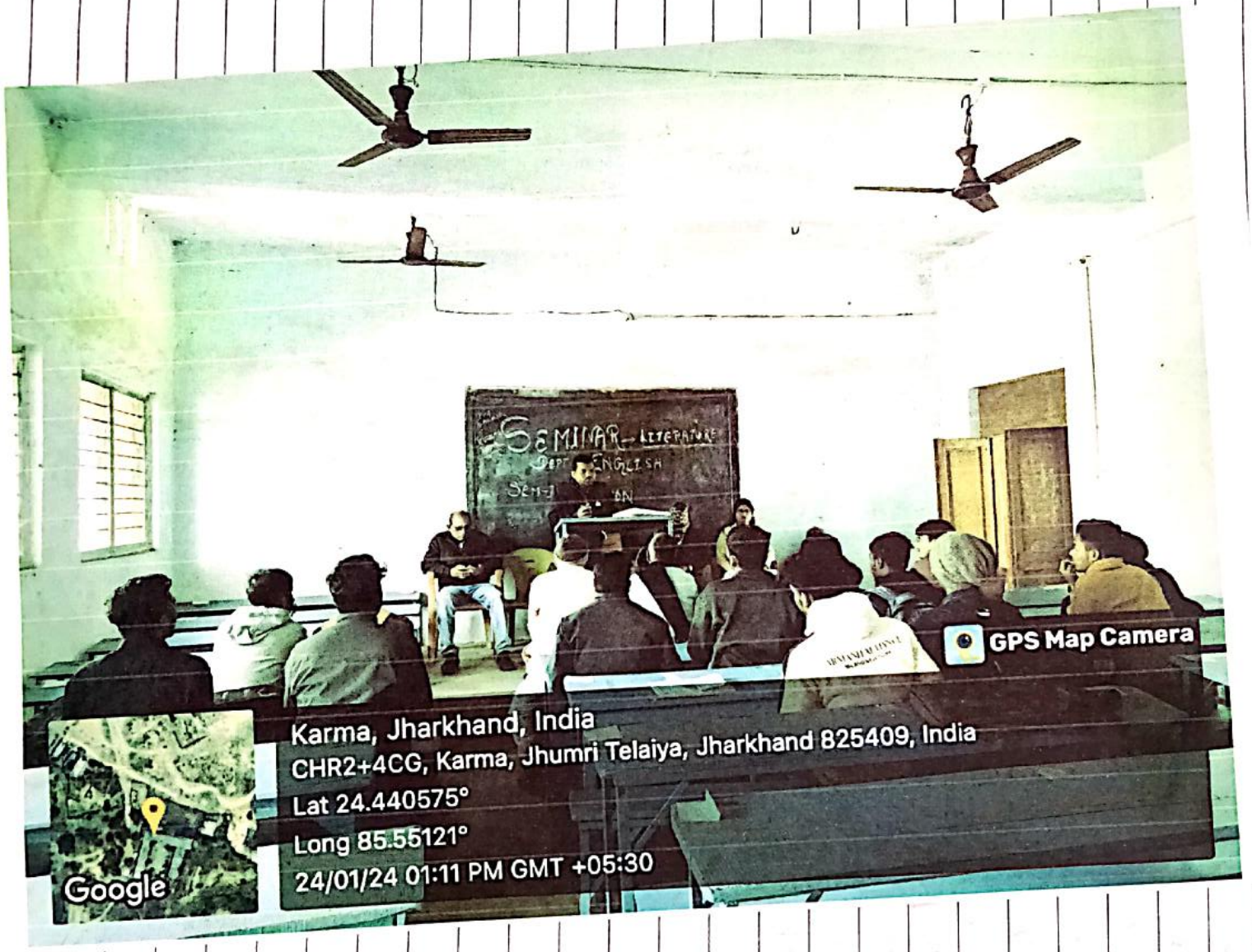

Peacock
Page No.
Date : / /

s Signature.....................

Page No.
Date : / /

Signature of Students	Roll. No	Sem.
01 Md. Adil	683	Ist
02 Rolind Saw	247	1st.
03. Satyam kumar sharma	602	1st
04. Uday kumar yadav	1180	1st
05 Devashish kr Gupta	118	1st
06. Ankit Kumar	476	1st
07. chandan Yadav	789	1st
08. Rahul Kumar	461	Ist
09. MD. Samir	1274	1st
10. Om kumar	1009	1st
11. MD Saklain Ansari	525	1st
12. Uttu Kumar singh	239	1st
13. Ganesh Kumar	303	Ist
14. Soni kumari	528	1st
15.		

SEMINAR

Topic: On the Development of 18 & 19th Century English Literature.

Today on 15th April, 2024, in Room-09, a Seminar was organised on the Topic- "On the Development of prose in 18th & 19th century English Literature".

The Seminar was presided over by the Department of English Prof. Jeeblal Rana. The Stage was Conducted by Saurav Kr. yadav, the Student of Sem III of English Department. In this Seminar, teachers and Students express their views on the topic. After the vote of thanks at 02:00 PM. the closing announcement was made by Jeeblal Rana.

Jeeblal Rana
Dept. of English.

15-4-24
Principal.
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Signature of Teachers'

1. Prof. A.K. Swarnkar - Deptt of Eco - [signature] 15/4/24
2. Prof Yugal Saw Dept History - [signature] 15/04/24
3. Prof. R.S. Rana Dept - Pol. Sc. [signature] 15.4.24
4. Dr. Arun Kr. Singh Deptt of English - [signature] 15/4/24
5. [signature] 15/4/24
6. Prof Kailash Rana [signature]
7. Sunil Kumar [signature] 15/4/24
Prof. 15/4/24 [signature]

Peacock
Page No.
Date: / /

(9) Vijay Das

(10) Dr. G.P. Diwakar - [signature] 15.04.24

(11) Prof. Kishori Saw - [signature] 15/04/24

Date
15/04/2024
SEMINAR
Dept of English
TOPIC
GPS Map Camera
Karma, Jharkhand, India
CHR2+4CG, Karma, Jhumri Telaiya, Jharkhand 825409, India
Lat 24.440112°
Long 85.55111°
15/04/24 12:16 PM GMT +05:30
Google

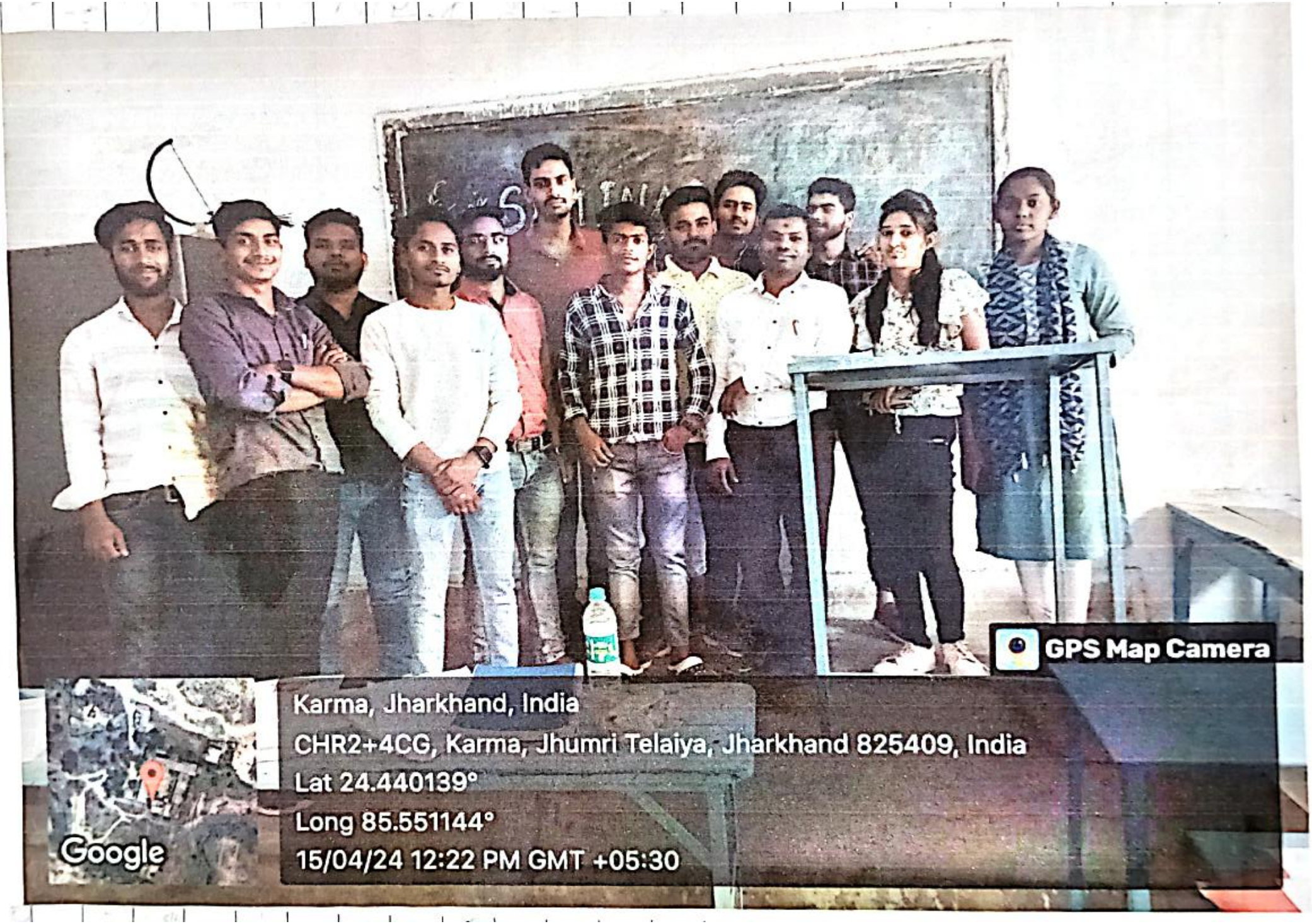
GPS Map Camera
Karma, Jharkhand, India
CHR2+4CG, Karma, Jhumri Telaiya, Jharkhand 825409, India
Lat 24.440139°
Long 85.551144°
15/04/24 12:22 PM GMT +05:30
Google

Page No.
Date: / /

Signature of Students present in the Seminar

Name	Class. R.N.	Mob. No
1. Ajay Kumar	429	72090128
2. Dhiraj kr. yadav	577	88092277 18
3. Shyamsundar yadav	407	840908114
4. Ankit Kumar Singh	269	8863931918 ~~23064103~~
5. Sanjar Ansari	276	950829508
6. Ravi Kumar yadav	091	878954423
7. Priyanshu Kumar	081	9142847 88
8. Sujit kr Jaglan	18	860826867
9. Gautam Pandit	68	6204287044
10. Ankit Kumar	69	8825346992
11. Suman Kumar	526	620370537 8
12. Ritu kumari	821	9939031060
13. Sonam Soni	903	620285368
14. muskan Sinha	1077	9234925
15.		
16.		
17.		
18.		
19.		
20.		

सेमिनार संख्या – 01

आज दिनांक 07- दिसम्बर 2023 दिन गुरुवार अपराह्न 2 बजे से महाविद्यालय कमरा संख्या 06 में इतिहास विभाग की ओर से एक सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का विषय – "प्राचीन भारत के इतिहास में समुद्रगुप्त भारतीय नेपोलियन क्यों कहाँ जाता है" था।

सेमिनार की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० सोहर यादव एवं मंच संचालन विभाग के अध्यक्ष प्रो० युगल साव ने किया। सेमिनार में शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने अपना अपना विचार व्यक्त किया। 4 बजे धन्यवाद ज्ञापन के बाद सेमिनार समाप्त करने की घोषणा की गई।

07.12.2023
विभागाध्यक्ष

7-12-2023
प्राचार्य
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

शिक्षकों का हस्ताक्षर

1. प्रो० किशोरी साव
2. अशोक कुमार [illegible]
3. अरविन्द कुमार सिन्हा
4. Vijay [illegible]
5. जगदीश प्रसाद
6. Arti Kumari
7. प्रो० रामेश्वर प्र० राणा
8. म३ल [illegible]
9. Dr. Arun Kr. Singh
10. Nirmala [illegible]
11. Dr. G. P. Diwakar

Signature........................

उपस्थित छात्र-छात्राओं का हस्ताक्षर

01 Suman Kumari
02 Ravi Kumar
03 Ashish Kumar.
04 Binod Thakur
05 Bablu Kumar yadav
06 Jyoti kumari
07 Seema Kumari
08 Ranjana chandrawanshi
09 Kuldeep Kr. pandey
10 Nikku Ku. Verma
11 Jitendra Kumar
12 Rohit kumar gupta
13 Md. Sohal khan
14 Amit Kumar gupta
15 Pawan Kumar Verma
16 Anchal Kumari
17 Sandeep Kumar Pandit
18 Hritik kumar
19 Sumit kumar.
20 Sonu Rajak
21 Gaurav Kumar
22 Saurabh kumar
23 Upendra Kumar Yadav
24 Shravan kumar
25 Deepali Kumari
26 PUJA KUMARI
27 Pradyuman Kumar
28 Arvind Kumar
29 Raj kumar
30 Arun kumar
31 Ajay. Kumar
32 Suraj Kumar Pandey
33 Priti Kumari

Signature........................

Page No.
Date: / /

34 Ajit kumar yadav
35 Harendra yadav
36 Ashish k. yadav
37 Rohit sharma
38 Jitendra yadav
39 Rupesh yadav
40 Deepak Kumar.
41 Arun kumar
42 Deepak yadav
43 Santosh kumar yadav
44 Abhishek Kumar
45 Kundan Rajak
46 Sudhir kumar yadav
47 subanti kumari
48 Abhishek kumar
49 kundan kumar
50 Santosh kumar
51 Anik yadav
52 mithun kumar
53 Piyush Kumar.
54 Pankaj Yadav
55 Soniya Kumari
56 Rampravesh yadav
57 Damyanti kumari
58 [illegible]
59 Ritu RAJ
60 Sunidhilata kumari
61 Nitish Kumar.
62 sachin k.r singh
63 Mukesh Kr soni
64 vijay[illegible] kumar
65 Shalukumari Sharma
66 Dewashish - Kumar

Signature........

सेमिनार संख्या - 02

आज दिनांक 11/12/23 दिन सोमवार को दिन 12 बजे से महाविद्यालय कमरा सं०- 07 में इतिहास विभाग की ओर से एक सेमिनार का आयोजन किया गया।
सेमिनार का विषय वस्तु - मुगलकाल में सम्राट अकबर को राष्ट्रीय बादशाह क्यों माना जाता है।
सेमिनार की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० साह ईश्वर एवं मंच संचालन इतिहास विभाग के प्रो० किशोरीलाल के द्वारा किया गया। सेमिनार में शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने अपना-अपना विचार व्यक्त किये। दिन 2 बजे धन्यवाद ज्ञापन के बाद सेमिनार समाप्त करने की घोषणा प्राचार्य महोदय द्वारा की गई।

[signature] 11.12.2023
विभागाध्यक्ष

[signature] 11-12-23
प्राचार्य

PRINCIPAL
[illegible] College
[illegible]

शिक्षकों का हस्ताक्षर
1. प्रो० किशोरी लाल
2. प्रो० [illegible]
3. अशोक कुमार [illegible] 11/12/23
4. अरविन्द कुमार मिश्रा
5. प्रो० राजेश्वर प्रसाद [illegible]
6. Vijay Kumar
7. [signature]
8. Arti Kumari
9. मदन कु० [illegible]
10. Dr. G.P. Diwakar
11. [signature]
12. Dr. Arun Kr. Singh

छात्रों का हस्ताक्षर

01 Komal Kumari
02 Anjali Kumari Sao
03 Nandita Kumari
04 Suman Kumari
05 Kajal Kumari
06 Nitu Kumari
07 Priyanka Kumari
08 Kavita Kumari
09 Priyanka Kumari
10 Priya Kumari
11 Anjali Singh
12 Rupesh Kumar
13 Shivani Kumari
14 Bablu Kumar yadav
15 Rohit Kumar
16 Sujeet Kumar
17 Anjali Kumari
18 PRIYANKA Kumari
19 Sarita Kumari
20 Amir Hussain
21 Sonu yadav
22 Asha Kumari
23 Anisha Kumari
24 Kajal Kumari
25 Kajal Kumari
26 Vicky Kr.
27 Nikita Kumari
28 Asha Singh
29 Laxmi Sharma
30 Kuldeep Kr. pandey
31 [illegible]
32 [illegible] Sharma
33 Rumci Kumari

Signature............

Signature............

Page No.
Date: / /

34 Sudhir Kumar Das
35 Pintu Kumar Das
36 Arshad Khan
37 Shafiullah Ansari
38 Sandeep Kumar
39 Shivani Kumari
40 Anjali Kumari
41 Kajal Kumari
42 Rubi Kumari
43 Rubiya Khatun
44 Chandni Kumari
45 Arfa naaz
46 Soni Kumari
47 Sandip Kumar
48 Gayatri Kumari
49 Priyanka Kumari
50 Yashoda Kumari
51 Rani Kumari
52 Sugandi Kumari
53 Nikam Kumari
54 Laxmi Kumari
55 Rupa Kumari
56 Jyoti Kumari
57 Sulochana Kumari
58 Rira Kumari
59 Nisha Kumari
60 संदीप राम
61 Sonu Kumar
62 Komal Kumari
63 Santoshi Kumari
64 Ashish K. Yadav
65 Rohit Sharma
66 Khushboo Kumari

Signature..................

सेमिनार संख्या - 03

आज दिनांक 09.01.2024 दिन मंगलवार अपराह्न 2 बजे से महाविद्यालय कमरा संख्या 07 में इतिहास विभाग की ओर से एक सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का विषय 'बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना' है।

सेमिनार की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो० सोहर यादव एवं मंच का संचालन विभाग के अध्यक्ष प्रो० युगल साव ने किया। सेमिनार में शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने अपना-अपना विचार व्यक्त किया। 5 बजे धन्यवाद ज्ञापन के बाद समाप्त करने की घोषणा की गई।

[illegible] 9.01.24
विभागाध्यक्ष

[illegible] 9.1.2024
प्राचार्य

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

उपस्थित शिक्षकों का हस्ताक्षर

1. प्रो० किशोरी साव
2. प्रो० श्याम किशोर ठाकुर
3. " Rameshwar Pd. Rana
4. अशोक कुमार [illegible] 9.01.24
5. Aarti Kumari
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. Madhav Kr Ram
10. [illegible]
11. Dr. G.P. Diwakar

विद्यार्थियों का हस्ताक्षर

1. Savita Kumari
2. Chandni Kumari
3. Rubi Kumari
4. Ankit Raj
5. Aakanksha Kumari
6. Sonali Kumari
7. Satish yadav
8. Anchal Kumari
9. Sachin Kr Sharma
10. Virandri Kumari
11. Dipan Kumar
12. Salma Khatun
13. Sonali Kumari
14. Raushan Kumar
15. Pintu Kumar Saw
16. Abhishek Kumar Saw
17. Abhishek Kumar
18. Sanjit Pandit
19. Khushboo Kumari
20. Aktul Rahman
21. Prashant Kr. Singh
22. Suraj Kumar
23. Ankit Kumar
24. Gulsham Parveen
25. Anjani Kumari
26. Deepak [illegible]
27. Dinesh Saw
28. Bittu Kumar
29. भारती कुमारी
30. Upendra yadav
31. Sajan Kumar
32. Sachin Kumar
32. SURAJ Kumar

Page No.
Date: / /

33 Sachin Yadav
34 Puja kumari
35 Keshav kumar
36 Ramjeet yadav
37 Kajal Kumari
38 Usha Kumari
39 Kajal Kumari
40 Kundan Rajak
41 Muskan Kumari
42 Kaushalya Kumari
43 Sarita Sharma
44 Anand kumar
45 Kumari Preeti
46 Kumari Suman
47 Kumari Neelam.
48 Payal Kumari
49 Asha Kumari
50 Vijay yadav
51 Ranjana chandrawanshi
52 Pinki Kumari
53 Ranjeet Kumar
54 Mahesh yadav
55 Nandkishor sharma
56 Puja kumari
57 Rampravesh yadav
58 Pooja kumari
59 Tinka Raw
60 madhu kumari
61 Sunaina kumari
62 Pushpa Kumari
63 Suraj Ravidas
64 Saurabh Kumar.
65 Upendra kumar yadav

Signature.........

सेमिनार संख्या - 04

आज दिनांक 12.01.2024 दिन शुक्रवार अपराह्न 1 ब. बजे से महाविद्यालय कमरा संख्या 02 में इतिहास विभाग की ओर से एक सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार का विषय 'प्लासी और बक्सर युद्ध का तुलनात्मक अध्ययन' था।

सेमिनार की अध्यक्षता कॉलेज के प्राचार्य प्रो० सोहर यादव एवं मंच का संचालन इस विभाग के प्रो० किशोर साव ने किया। सेमिनार में शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने अपना-अपना विचार व्यक्त किया। 3 बजे धन्यवाद ज्ञापन के बाद समाप्त करने की घोषणा की गई।

[signature] 12.01.2024
विभागाध्यक्ष का हस्ताक्षर

[signature] 12.1.24
प्राचार्य

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

शिक्षक का हस्ताक्षर

1 Rameshwar Pd. Rana
2 Arti Kumari
3 [illegible] कुमार सिंह
4 किशोरी साव
5 प्रो. श्याम किशोर ठाकुर
6 [signature]
7 [signature]
8 [illegible] कुमार [illegible] 12/01/24
9 Naradlal [illegible]
10 मंजु [illegible]
11 Dr. G.P. Diwakar

छात्रों का हस्ताक्षर

1 Pappu Yadav
2 Ajit Yadav
3 Ranjeet Yadav
4 Sudhir Thakur
5 Rahul Sharma
6 Ranjeet Yadav
7 Kalita Kumari
8 Sanjeev Yadav
9 Neha Kumari Sony
10 Kajal Kumari
11 Sunil Kumar Rana
12 Jyoti Kumari
13 Samir Ansari
14 Kunti Kumari
15 Khushbu Kumari
16 Ravi Kumar
17 Riya Kumari
18 Anu Kumari
19 Abhishek Raj
20 Ankit Kumar
21 Jitendra Kumar
22 Urmila Kumari
23 आकाश कुमार, यादव
24 Puja Kumari
25 सूरज कु० राणा
26 Sonu Kumar
27 Divya Kumari
28 Sima Kumari
29 Binod Thakur
30 Rajkumar Rana
31 Saurabh Kumar
32 Rubi Kumari
33 Chandni Kumari

Signature..........

Signature..........

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute
ISSN: 0378-1143

सूरदास का वात्सल्य

Sohar yadav
Principal and Head department of Hindi, (Jhumri Telaiya Commerce College)

सार

हिंदी साहित्य के इतिहास में सूरदास का नाम अमर है। इनकी कृतियों में भक्ति भाव सर्वोपरि है, परंतु उनकी विलक्षणता उनके वात्सल्य वर्णन में निहित है। उन्होंने माता यशोदा के हृदय से कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया है, जिससे उनकी रचनाओं में मातृत्व का एक नायाब चित्र उभर कर आता है। सूरदास ने कृष्ण को भगवान की अपेक्षा एक प्यारे बालक के रूप में देखा है। यशोदा के माध्यम से उन्होंने मातृत्व की कोमलता, चिंता, लाड़, प्यार और त्याग को अभिव्यक्त किया है। उनके पदों में बाल कृष्ण की शरारतें, उनकी चंचलता, उनकी हठ और उनकी मासूमियत का मार्मिक चित्रण मिलता है। यशोदा मां के रूप में सूरदास कृष्ण की इन लीलाओं को देखते हुए कभी हर्ष से भर उठती हैं, तो कभी चिंता ग्रस्त हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, "है कोई ब्रज में हिंदू हमारी चलते गोपालहिं राखें" में यशोदा मां कृष्ण के माखन चुराने की शरारत से परेशान हैं, वहीं "बैठी यशोदा रानी झूला झुलावे" में कृष्ण को झूला झुलाते हुए उनके हृदय में प्रेम का संचार होता है।

सूरदास के वात्सल्य वर्णन की विशेषता उनकी भाषा शैली में भी है। उन्होंने सरल ब्रज भाषा का प्रयोग किया है, जो मातृत्व के भाव को और भी सजीव बना देता है। उनकी कविताएँ लोकगीतों की तरह सरल और लयबद्ध हैं, जिससे उनका पाठ करने में सहजता आती है। सूरदास के वात्सल्य वर्णन में यशोदा के अलावा नंद बाबा और गोपियों के कृष्ण के प्रति प्रेम को भी दर्शाया गया है। इससे यह

स्पष्ट होता है कि वात्सल्य भाव माता-पिता तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के विभिन्न सदस्यों के बीच भी पाया जाता है।

मुख्य शब्द

हिंदी, साहित्य, इतिहास, सूरदास

भूमिका

सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिंदी साहित्य में अद्वितीय है। उन्होंने मातृत्व के कोमल और गहरे भावों को इतनी सजीवता से चित्रित किया है कि यह आज भी पाठकों के हृदय को छू लेता है। उनकी रचनाएं न केवल भक्ति भाव को जगाती हैं, बल्कि पारिवारिक रिश्तों की महत्ता का भी बोध कराती हैं।

महाकवि सूरदास हिन्दी साहित्य के एक अग्रणी कवि माने जाते हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं में कृष्णभक्ति का अद्वितीय स्वरूप प्रस्तुत किया है। उनके काव्य में श्रृंगार और शांत रस के साथ ही वात्सल्य का भी अत्यंत मनमोहक वर्णन मिलता है। सूरदास को वात्सल्य का सम्राट माना जाता है, क्योंकि उन्होंने अपने पदों में मातृत्व के निःस्वार्थ प्रेम को अभूतपूर्व शैली में व्यक्त किया है।

सूरदास के काव्य में वात्सल्य का वर्णन मुख्यतः बाल कृष्ण के माता-पिता, विशेषकर माता यशोदा, के दृष्टिकोण से किया गया है। यशोदा के हृदय में अपने कृष्ण के लिए जो असीम प्रेम, चिंता और स्नेह है, उसे सूरदास ने इतनी बारीकी से चित्रित किया है कि पाठक स्वयं को यशोदा के स्थान पर अनुभव कर लेता है।

सूरदास के वात्सल्य वर्णन की विशेषताएँ

स्वाभाविकता: **सूरदास का वात्सल्य वर्णन अत्यंत स्वाभाविक है। वह माता-पिता के क्रिया-कलापों, भावनाओं और चिंताओं को सहजता से व्यक्त करते हैं। उदाहरण के लिए, यशोदा कृष्ण के मक्खन चुराने पर उन्हें डांटती हैं, मगर उनके मन में प्रेम ही झलकता है।**

विविधता: सूरदास ने वात्सल्य के विभिन्न रूपों को दर्शाया है। माँ यशोदा का कृष्ण के प्रति लाड़-प्यार, पिता नंद का संरक्षण, गोपियों का मातृत्व भाव, सभी कुछ बारीकी से चित्रित किया गया है।

रमणीयता: सूरदास के पदों में वात्सल्य का वर्णन इतना रमणीय और मधुर है कि पाठक को आनंद की अनुभूति होती है। उनकी भाषा सरल और प्रवाहमयी है, जो भावों को सीधे हृदय तक पहुंचा देती है।

मार्मिकता: सूरदास का वात्सल्य वर्णन मार्मिक है। वह माँ-बेटे के रिश्ते की ममता, चिंता और प्रेम को इतनी गहराई से छू लेते हैं कि पाठक की आँखें भी छलक पड़ती हैं।

सूरदास के वात्सल्य वर्णन का महत्व

हिन्दी साहित्य में योगदान: सूरदास के वात्सल्य वर्णन ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है। उन्होंने वात्सल्य को एक स्वतंत्र रस के रूप में स्थापित किया और भक्ति भाव को एक नया आयाम दिया।

मानवीय रिश्तों का चित्रण: सूरदास के पद माँ-बेटे के रिश्ते की सुंदरता और मधुरता को उजागर करते हैं। उनके पद आज भी माता-पिता और संतान के बीच प्रेम को मजबूत करने का काम करते हैं।

अनुभवात्मक बोध: सूरदास के पद हमें मातृत्व के त्याग, प्रेम और चिंता का गहरा अनुभव कराते हैं। उनके पदों में जो सार्वभौमिक भाव हैं, वे सभी को प्रभावित करते हैं।

सूरदास की प्रमुख रचनाएँ

सूरसागर: यह सूरदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है, जिसमें 10000 से अधिक पद हैं। यह श्रीकृष्ण की बाललीलाओं और लीलाओं का वर्णन करता है।

साहित्य लहरी: यह रचना 118 पदों का संग्रह है, जिसमें रस, अलंकार और नायिका-भेद का वर्णन है।

सूरसारावली: **यह रचना** 84 **पदों का संग्रह है**, **जिसमें भक्ति और प्रेम का वर्णन है।**

नाल-दमयन्ती: **यह रचना महाभारत के नल-दमयन्ती प्रसंग पर आधारित है।**

ब्याहलो: **यह रचना श्रीकृष्ण के विवाह का वर्णन करती है।**

सूरदास की रचनाओं की विशेषताएं

भक्ति: **सूरदास की रचनाओं में भक्ति का भाव गहरा है। उनके पदों में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति का अद्‌भुत चित्रण है।**

प्रेम: **सूरदास की रचनाओं में प्रेम का भाव भी महत्वपूर्ण है। उनके पदों में श्रीकृष्ण और गोपियों के बीच प्रेम का अद्‌भुत वर्णन है।**

सौंदर्य: **सूरदास की रचनाओं में सौंदर्य का भाव भी उभरकर सामने आता है। उनके पदों में ब्रजभूमि और श्रीकृष्ण की लीलाओं का सौंदर्यपूर्ण वर्णन है।**

भाषा: **सूरदास की रचनाओं में ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है। उनकी भाषा सरल, मधुर और प्रभावशाली है।**

छंद: **सूरदास की रचनाओं में विभिन्न प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ है। उनके पदों में छंदों का प्रयोग बहुत ही सुंदर और प्रभावशाली है।**

सूरदास की रचनाओं का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी रचनाओं ने हिन्दी भक्ति साहित्य को समृद्‌ध किया है। उनकी रचनाओं में भक्ति, प्रेम और सौंदर्य का अद्‌भुत संगम देखने को मिलता है।

सूरदास का वात्सल्य

सूरदास का वात्सल्य वर्णन न केवल हिन्दी साहित्य का गौरव है, बल्कि मानवीय रिश्तों की गहराई को समझने का एक अनूठा माध्यम भी है। उनकी रचनाएँ सदियों से पाठकों को अपने मधुर संगीत और मार्मिक भावों से मंत्रमुग्ध करती रही हैं, और आने वाले समय में भी करती रहेंगी।

सूरदास का नाम हिंदी साहित्य में अमर है, जो उनकी कृष्णभक्ति और वात्सल्य भाव के अद्वितीय चित्रण के कारण है। उनकी कृति, सूरसागर, कृष्ण लीलाओं का ऐसा मधुर वर्णन प्रस्तुत करती है, जिसमें वात्सल्य भाव, विशेष रूप से यशोदा मईया के मातृत्व का चित्रण, सर्वोपरि स्थान रखता है।

सूरदास ने अपने काव्य में कृष्ण के बाल रूप का अत्यंत मनमोहक और सजीव चित्रण किया है। उनकी कविताएँ बाल कृष्ण की चंचलता, जिज्ञासा, और मस्ती को जीवंत कर देती हैं। लेकिन, इस बाल रूप के साथ उन्होंने माता-पिता के उस प्रेम को भी चित्रित किया है, जो वात्सल्य कहलाता है।

सूरदास की रचनाओं में यशोदा का चित्रण सबसे अधिक मार्मिक है। वे यशोदा के माध्यम से मातृत्व के सभी रूपों को अभिव्यक्त करते हैं। माँ का लाड़-प्यार, चिंता, क्रोध, और क्षमा – सभी भावों को उन्होंने बड़ी ही सूक्ष्मता से व्यक्त किया है।

उदाहरण के लिए, एक पद में यशोदा कृष्ण को दूध पिलाने का वर्णन करती हैं, जिसमें उनकी ममता साफ झलकती है:

"चंचल चितवन, हँसी ठहर-ठहर, माखन मरोड़े अधरन बीच।"

यहाँ, सूरदास कृष्ण की चंचलता और यशोदा के ममतापूर्ण दूध पिलाने को चित्रित करते हैं।

कहीं यशोदा कृष्ण की शरारतों पर चिंता व्यक्त करती हैं, तो कहीं उनकी गलतियों पर डांट भी देती हैं। लेकिन, हर भाव के पीछे मातृत्व का ही स्पर्श है।

उदाहरण के लिए, एक अन्य पद में यशोदा कृष्ण को माखन चुराने के लिए डांटती हैं, लेकिन उनकी डांट में भी प्रेम का समावेश है:

"कान्ह! खायो है माखन चोर। अब मुख धोवत क्यों नहिं होर?"

यहाँ, सूरदास यशोदा के क्रोध को भी माता के प्रेम के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

सूरदास के वात्सल्य वर्णन की विशेषता यह है कि वह अत्यंत स्वाभाविक और यथार्थ है। ऐसा लगता है कि सूरदास ने स्वयं माता के मन को समझ लिया है और उसी भाव से अपने पदों की रचना की है। उनकी भाषा सरल और प्रवाहमयी है, जो पाठकों के हृदय को छू लेती है।

इस प्रकार, सूरदास ने अपने वात्सल्य वर्णन के माध्यम से न केवल कृष्ण लीलाओं को जीवंत बनाया है, बल्कि माता-पिता के प्रेम की महानता को भी उजागर किया है। उनकी रचनाएँ आज भी पाठकों के मन को छू लेती हैं और उन्हें मातृत्व के मधुर गान का अनुभव कराती हैं।

महाकवि सूरदास हिंदी साहित्य के एक रत्न हैं। यद्यपि उनके जीवन के बारे में निश्चित जानकारी कम है, उनकी रचनाओं ने उन्हें अमर बना दिया है। उनकी कविता में भक्ति रस की अलौकिक छटा देखने को मिलती है, जो उन्हें अन्य कवियों से अलग करती है।

सूरदास की रचनाओं में मुख्य रूप से दो भाव प्रधान हैं: वात्सल्य और श्रृंगार। वात्सल्य भाव में उन्होंने कृष्ण के बाल रूप का मनमोहक चित्रण किया है। यशोदा मां के लाडले कन्हैया की लीलाओं का वर्णन इतना सजीव है कि पाठक स्वयं को उसमें खोया हुआ पाता है। उनकी कविता से कृष्ण की चंचलता, शरारत और मासूमियत झलकती है।

दूसरी ओर, श्रृंगार रस में सूरदास ने गोपियों के कृष्ण के प्रति प्रेम का अद्भुत वर्णन किया है। विरह की पीड़ा, कृष्ण के दर्शन की लालसा और उनके संग मिलने की आशा को उन्होंने इतनी मार्मिकता से व्यक्त किया है कि पाठक स्वयं को गोपियों के भावों में समाहित महसूस करता है।

सूरदास की भाषा में ब्रजभाषा की मिठास है। उन्होंने अपनी कविता में संगीत का भी खूबसूरत समावेश किया है। उनकी रचनाएँ विभिन्न राग-रागिनियों से जुड़ी हैं, जो उन्हें गायन के लिए भी उपयुक्त बनाती हैं।

सूरदास की कविता केवल मनोरंजन नहीं करती, बल्कि भक्ति का मार्ग भी प्रशस्त करती है। उनके पदों में कृष्ण के प्रति प्रेम और समर्पण की भावना इतनी गहरी है कि पाठक को भी भक्ति रस में डूबने के लिए प्रेरित करती है।

संक्षेप में, सूरदास हिंदी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनकी कविता में भक्ति, प्रेम, संगीत और भाषा का ऐसा समागम है जो आज भी पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। उनकी रचनाएँ सदियों से लोगों को प्रेरित करती रही हैं और आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करती रहेंगी।

सूरदास, हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन महान कवि, अपनी अद्‌भुत रचनाओं के लिए जाने जाते हैं। उनकी रचनाओं में भक्ति, प्रेम और सौंदर्य का अद्‌भुत संगम देखने को मिलता है।

निष्कर्ष

सूरदास हिन्दी साहित्य के महान कवि थे। उनकी रचनाओं में भक्ति, प्रेम और सौंदर्य का अद्‌भुत संगम देखने को मिलता है। उनकी रचनाओं का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। सूरदास की रचनाओं में मुख्य रूप से 'सूरसागर' शामिल है, जो उनकी सबसे प्रसिद्‌ध कृति है। 'सूरसागर' में दस हजार से अधिक पद हैं, जो कृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करते हैं। इनमें बाल-लीला, रास-लीला, विरह-लीला, गोवर्धन-लीला, और अन्य लीलाओं का अद्‌भुत चित्रण मिलता है।

सूरदास की भाषा सरल, सहज और मधुर है। उन्होंने ब्रजभाषा का अत्यंत प्रभावशाली प्रयोग किया है, जो उनकी रचनाओं को अत्यंत लोकप्रिय बनाता है। उनकी रचनाओं में भावनाओं की गहनता, कल्पना की उड़ान, और संगीतमयता का अद्‌भुत समावेश है। सूरदास की रचनाओं में 'भक्तिरस' की प्रधानता है। कृष्ण के प्रति उनका अगाध प्रेम और भक्ति उनकी रचनाओं में सर्वत्र झलकती है। उनकी रचनाओं में न केवल भक्ति का भाव है, बल्कि नीति, दर्शन, और

जीवन-मूल्यों का भी समावेश है। सूरदास की रचनाओं का प्रभाव हिंदी साहित्य पर अत्यंत व्यापक रहा है। उनकी रचनाओं ने भक्तिकालीन साहित्य को नई दिशा दी और ब्रजभाषा को साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संदर्भ

1. **सूरदास की वात्सल्य रचनाएँ** (**संपादक**: **रामचंद्र शुक्ल**)
2. **सूरदास का वात्सल्य** (**लेखक**: **रामस्वरूप चतुर्वेदी**)
3. **सूरदास का वात्सल्य वर्णन** (**लेखक**: **शिवनंदन लाल**)
4. "**सूरदास का वात्सल्य वर्णन**" (**लेखक**: **रामचंद्र शुक्ल**)
5. "**सूरदास का वात्सल्य**: **एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन**" (**लेखक**: **रामस्वरूप चतुर्वेदी**)
6. "**सूरदास के वात्सल्य पदों में बाल-मनोविज्ञान**" (**लेखक**: **शिवनंदन लाल**)

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

सूरदास का वात्सल्य

Authored By

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

Sohar yadav

Published in Vol. C, Issue-6, 2023
Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute with ISSN : 0378-1143
UGC-CARE List Group I
Impact Factor: 6.5

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

ISSN: 0378-1143

ROLE OF CAPITAL IN AGRICULTURE

Ashok Kumar Swarnkar

Assistant Professor, Department of Economics, (Jhumri Telaiya Commerce College)

ABSTRACT

From the dawn of civilization, agriculture has been the backbone of human society, providing sustenance and fueling economic growth. However, this crucial sector often faces challenges, highlighting the critical role of capital in overcoming these obstacles and ensuring sustainable agricultural practices.Capital, in its broadest sense, encompasses various resources required for efficient agricultural production. Tangible Capital includes physical assets like machinery, irrigation systems, storage facilities, and transportation infrastructure. Modern farming heavily relies on tractors, harvesters, and precision agriculture equipment, which increase efficiency and productivity. Irrigation systems ensure adequate water supply, while storage facilities minimize post-harvest losses. Robust transportation infrastructure encompasses knowledge, skills, and expertise possessed by farmers and agricultural professionals. Investments in education, research and development, and extension services empower farmers with the know-how to adopt sustainable practices, improve land management, and utilize new technologies effectively. Additionally, investments in innovation within the agricultural sector promote the development of improved crop varieties, resilient seeds, and effective pest management techniques.Financial Capitalrefers to funds needed for various agricultural activities, including purchasing inputs like fertilizers, pesticides, and seeds, as well as financing land improvements and technological upgrades. Access to affordable credit allows farmers to invest in crucial resources and adopt modern practices, ultimately enhancing their competitiveness and profitability.

KEYWORDS: Capital, Agriculture, Economy, Profitability

INTRODUCTION

Capital investments enable farmers to adopt more efficient production methods, leading to higher yields and improved operational efficiency. This not only benefits individual farmers but also contributes to overall food security by meeting the growing demands of a burgeoning population.(Montek, 2018)

Investments in sustainable practices, such as water-saving irrigation technologies and organic farming methods, allow farmers to minimize environmental impact and ensure long-term resource availability.

Efficient transportation infrastructure and storage facilities facilitate seamless product movement, connecting agricultural outputs to wider markets. This empowers farmers to fetch higher prices and gain access to valuable market information.

Access to knowledge, skills, and financial resources empowers farmers to make informed decisions, adopt innovative practices, and improve their income and livelihoods.

However, ensuring equitable access to capital remains a challenge in many regions. Small-scale farmers often face difficulties acquiring loans due to limited land ownership or lack of collateral. Additionally, the high cost of modern machinery and technologies can restrict access to these resources for smaller farms.(Hanumantha, 2015)

ISSN: 0378-1143

Therefore, fostering a conducive environment for agricultural investment is crucial. This includes:

Public-private partnerships: Collaborations between government and private entities can channel resources towards infrastructure development, research, and extension services, especially in underserved regions.

Microfinance initiatives: Tailored financial instruments and credit schemes can make loans and resources more accessible to small-scale farmers.

Investment in education and training: Equipping farmers with the knowledge and skills to utilize capital resources effectively is essential for maximizing their impact.

In conclusion, capital plays a pivotal role in the development of a robust and sustainable agricultural sector. By ensuring equitable access to different forms of capital, fostering innovation, and creating an enabling environment, we can empower farmers to unlock their full potential, securing food security and building a more prosperous future for all.

For millennia, agriculture has been the backbone of human civilization, providing sustenance and fueling progress. Today, despite its long history, the agricultural sector stands at the precipice of exciting new opportunities. A growing global population, coupled with the challenges of climate change and resource scarcity, demands innovative and sustainable solutions. This essay will explore the diverse opportunities presented in this dynamic field, encompassing technological advancements, sustainable practices, and the rise of niche markets.(Tyagi, 2019)

One of the most captivating opportunities lies in the realm of technological innovation. Precision agriculture, employing tools like drones and sensors, allows for real-time data collection and analysis, leading to increased efficiency and targeted resource management. Automation, through robots and other machinery, reduces manual labor and improves yield consistency. Additionally, advancements in gene editing and biotechnology hold the potential to develop crops resistant to pests and diseases, further enhancing productivity.

Beyond advancements in technology, sustainable practices offer a path towards long-term viability. Techniques like integrated pest management and cover cropping promote ecological balance, while organic farming caters to the growing consumer demand for healthy and environmentally friendly food. Additionally, regenerative agriculture focuses on restoring soil health, ensuring sustainability for future generations. These practices not only benefit the environment but also improve crop quality and resilience, creating a win-win situation for farmers and consumers alike.

The rise of niche markets presents another exciting opportunity for agricultural diversification. The growing demand for specialty products like organic produce, locally sourced ingredients, and ethically raised meats opens doors for farmers to cater to specific consumer preferences. Furthermore, the expansion of vertical farming and urban agriculture allows for cultivation in areas previously deemed unsuitable, creating new opportunities within densely populated regions.

However, it is crucial to acknowledge the challenges that accompany these opportunities. Unequal access to technology and infrastructure can exacerbate existing inequalities in the agricultural sector. Additionally, the integration of new technologies requires addressing concerns about potential job displacement and ethical considerations surrounding genetically modified organisms.

ISSN: 0378-1143

Agriculture presents a multitude of opportunities for progress and innovation. Embracing technological advancements, prioritizing sustainable practices, and capitalizing on niche markets hold the key to a transformed and thriving agricultural landscape. By addressing the existing challenges and fostering collaboration between stakeholders, we can cultivate a future where agriculture continues to nourish our planet and its inhabitants.(Joshi, 2019)

ROLE OF CAPITAL IN AGRICULTURE

One prominent opportunity lies in the realm of precision agriculture. By leveraging technology such as sensors, drones, and data analytics, farmers can gain invaluable insights into their land, crops, and livestock. This empowers them to optimize resource use, including water and fertilizers, minimize environmental impact, and ultimately, increase yield and profitability. For instance, smart irrigation systems can deliver water precisely where and when it's needed, reducing waste and ensuring optimal crop growth.

Furthermore, the rise of vertical farming presents a solution to the challenge of limited land availability, particularly in urban areas. This innovative approach utilizes stacked layers or controlled environments to grow crops indoors, maximizing productivity and minimizing reliance on traditional farming methods. Vertical farms can be particularly beneficial in regions with harsh climates or limited water resources.

The growing global demand for sustainable and organic food presents another significant opportunity. Consumers are increasingly seeking healthy and ethical food options, driving the growth of organic farming practices. This shift creates a lucrative market for farmers who can cater to this demand by adopting sustainable techniques that protect soil health, conserve water, and minimize the use of pesticides and herbicides.

Beyond food production, agriculture also holds immense potential in the development of biofuels and bio-based products. As the world transitions towards renewable energy sources, crops like switchgrass and jatropha can be cultivated to produce biofuels, offering a cleaner alternative to fossil fuels. Additionally, agricultural products can be used to create bio-based materials, such as biodegradable plastics, reducing reliance on non-renewable resources and mitigating plastic pollution.

However, unlocking these opportunities requires overcoming existing challenges. Investing in rural infrastructure such as transportation and storage facilities is crucial to ensure efficient distribution of agricultural products and minimize post-harvest losses. Additionally, educational initiatives are essential to equip farmers with the necessary knowledge and skills to adopt new technologies and sustainable practices. Addressing issues like land degradation and climate change necessitates fostering collaboration between various stakeholders, including researchers, policymakers, and farmers, to develop innovative solutions.

In conclusion, agriculture, once perceived as a traditional and static domain, is now brimming with exciting opportunities. By embracing technological advancements, adopting sustainable practices, and fostering collaborative solutions, we can cultivate a future where agriculture not only thrives but also contributes significantly to food security, environmental sustainability, and economic growth. As the world grapples with complex challenges, it is time to recognize agriculture not just as a source of sustenance, but as a seedbed of innovation for a brighter tomorrow.

Throughout history, agriculture has been the cornerstone of human civilization, nourishing populations and sustaining growth. However, its journey from subsistence farming to

ISSN: 0378-1143

modern, efficient food production has been heavily influenced by the role of capital. Capital, in its various forms, acts as the essential seed from which agricultural advancement flourishes.

One of the most readily recognized forms of capital in agriculture is tangible capital, encompassing physical assets like machinery, irrigation systems, storage facilities, and even land improvements. These investments directly impact productivity by enabling farmers to:

- Increase efficiency: Tractors and other farm machinery expedite tasks like plowing, planting, and harvesting, significantly boosting output per worker.
- Expand land use: Irrigation systems turn arid land into productive fields, while improved drainage helps reclaim fertile land prone to waterlogging.
- Reduce post-harvest losses: Proper storage facilities minimize spoilage, ensuring food security and maximizing profits for farmers.

Beyond the physical realm lies intangible capital, encompassing knowledge, skills, and institutional structures crucial for agricultural development. This includes:

- Education and training: Investing in farmers' education and training in areas like sustainable practices, crop management techniques, and financial literacy empowers them to make informed decisions and adapt to changing conditions.
- Research and development (R&D): Investment in R&D leads to the creation of new crop varieties, improved fertilizers and pesticides, and innovative farming methods, all contributing to increased yields and resilience against pests and diseases.
- Market infrastructure: Efficient market infrastructure, including transportation networks, cold storage facilities, and transparent pricing mechanisms, ensures farmers receive fair compensation for their produce, incentivizing investment and production.

Despite the undeniable benefits of capital, its availability remains a major challenge in many parts of the world. Small-scale farmers, particularly in developing nations, often struggle to access financial resources, limiting their ability to invest in essential infrastructure, technology, and knowledge. This creates a cycle of low productivity, low incomes, and continued dependence on traditional, often inefficient practices.

Bridging the gap in access to capital requires a multi-pronged approach:

- Public-private partnerships: Collaboration between governments, private investors, and financial institutions can create innovative financing schemes tailored to the needs of small-scale farmers.
- Microfinance initiatives: Providing microloans and financial literacy training can empower farmers to take control of their investments and build their capital base.
- Investment in rural infrastructure: Improving access to roads, electricity, and communication networks creates a more conducive environment for attracting investment and fostering agricultural development.

In conclusion, capital plays a vital role in propelling agricultural growth and ensuring food security. By ensuring equitable access to both tangible and intangible forms of capital, we can empower farmers, unlock the full potential of the agricultural sector, and pave the way for a more sustainable and prosperous future.

ISSN: 0378-1143

Beyond physical assets, intangible capital plays a crucial role in driving agricultural progress. This includes investments in human capital, through education and training programs that equip farmers with the skills and knowledge needed to adopt modern farming practices, utilize technology effectively, and make informed decisions. Additionally, investments in research and development (R&D) lead to the creation of new crop varieties, better pest and disease control methods, and more efficient farming techniques. These advancements ultimately contribute to increased productivity, improved food security, and adaptation to changing environmental conditions.

Financial capital, in the form of credit and financial services, is essential for bridging the gap between available resources and potential investment. Access to loans allows farmers to purchase essential equipment, seeds, and fertilizers, invest in infrastructure, and respond to unforeseen events like natural disasters. Furthermore, robust financial institutions enable farmers to manage risk, receive fair compensation for their produce, and ultimately break the cycle of poverty.

CONCLUSION

While the benefits of capital in agriculture are undeniable, it's crucial to acknowledge the potential challenges associated with its use. Unsustainable practices, driven by the pursuit of short-term profits, can lead to environmental degradation, soil depletion, and water scarcity. Therefore, responsible management of capital and the adoption of sustainable agricultural practices are crucial for ensuring long-term growth and environmental well-being.In conclusion, capital, in its various forms, plays a pivotal role in shaping the landscape of agriculture. From enabling efficient production to fostering innovation and ensuring food security, capital is a vital driver of agricultural progress. Nevertheless, responsible management and a focus on sustainability are essential for ensuring that agriculture continues to flourish, not just now, but for generations to come.

REFERENCES

1. Ahluwalia, Montek S. India's Economic Reforms and Development: Essays and Speeches. Oxford University Press, 2018.
2. Chadha, G. K. The State of Agriculture in India.Rupa& Co., 2017.
3. Dantwala, M. L. Indian Agriculture. Indian Council of Agricultural Research, 2019.
4. Rao, C. H. Hanumantha. Agricultural Development of India: Since Independence. Vol. 1. Sage Publications, 2015.
5. Acharya, S. S. "Impact of Agriculture on the Indian Economy." Agricultural Economics Research Review (2019): 121-130.
6. Dahiya, B. S. "Role of Agriculture in Indian Economy." Economic and Political Weekly (2020): 1723-1725.
7. Joshi, P. K., and M. S. Tyagi. "Determinants of Agricultural Growth in India: A Time Series Analysis." Agricultural Economics Research Review (2019): 131-140.
8. Rath, N. C. "Role of Agriculture in Indian Economy." Kurukshetra (2019): 11-14.

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

ROLE OF CAPITAL IN AGRICULTURE

Authored By

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

Ashok Kumar Swarnkar

Published in Vol. C, Issue-7, 2023
Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute with ISSN : 0378-1143
UGC-CARE List Group I
Impact Factor: 6.5

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

ISSN: 0378-1143

अद्वैत वेदांत शंकराचार्य

Madan Kumar Rana

Assistant Professor, Department of Philosophy, (Jhumri Telaiya Commerce College)

सार

भारतीय दर्शन शास्त्र में आदि शंकराचार्य का एक विशिष्ट स्थान है। उन्हें 8वीं शताब्दी के महान दार्शनिक, समाज सुधारक और अद्वैत वेदांत के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अद्वैत वेदांत दर्शन को पुनर्जीवित कर हिंदू धर्म को एक मजबूत दार्शनिक आधार प्रदान किया। अद्वैत का अर्थ है "अद्वितीय" अर्थात "दो नहीं"। इस दर्शन के अनुसार, ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है और संसार माया या भ्रम है। जीव (आत्मा) और ब्रह्म वास्तव में एक ही हैं, किन्तु अज्ञान के कारण जीव को ऐसा प्रतीत होता है कि वह ब्रह्म से अलग है। शंकराचार्य ने अपने जीवनकाल में व्यापक यात्राएँ कीं और शास्त्रार्थों में भाग लिया। उन्होंने चारों दिशाओं में - द्वारका, श्रृंगेरी, पुरी और बद्रीनाथ में मठों की स्थापना की, जिससे अद्वैत वेदांत के प्रचार-प्रसार में सहायता मिली। उन्होंने ब्रह्मसूत्र, उपनिषदों और भगवद्गीता पर भाष्य लिखकर वेदांत दर्शन की गहन व्याख्या प्रस्तुत की।

मुख्य शब्द

भारतीय, दर्शन, शास्त्र, शंकराचार्य

भूमिका

शंकराचार्य के अनुसार, मोक्ष प्राप्ति का मार्ग ज्ञान (ज्ञान प्राप्ति) और कर्म (निष्काम कर्म) है। उन्होंने सनातन धर्म के पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और विभिन्न मतों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया। आज भी, शंकराचार्य के विचार और दर्शन भारत सहित विश्वभर में दार्शनिक, आध्यात्मिक और धार्मिक जगत को प्रभावित करते हैं।

ISSN: 0378-1143

भारतीय दर्शन के क्षेत्र में आदि शंकराचार्य एक अद्वितीय और प्रभावशाली व्यक्ति हैं। उन्हें अद्वैत वेदांत दर्शन के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है, जिसने आध्यात्मिक चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

8वीं शताब्दी में जन्मे, शंकराचार्य एक विद्वान और दार्शनिक के रूप में विख्यात हुए। उन्होंने विभिन्न शास्त्रों का गहन अध्ययन किया और उपनिषदों के ज्ञान को अपने दर्शन का आधार बनाया। उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म (परम सत्ता) की एकता के सिद्धांत को उन्होंने अद्वैत (अद्वितीय) के रूप में प्रतिपादित किया।

अद्वैत वेदांत के अनुसार, केवल ब्रह्म ही सत्य है और संसार माया (मिथ्या) है। जीवात्मा (व्यक्तिगत आत्मा) और परमात्मा (ब्रह्म) एक ही हैं, लेकिन अज्ञान के कारण जीव को यह भ्रम होता है कि वह परमात्मा से अलग है। मोक्ष का लक्ष्य इस अज्ञान को दूर करना और आत्मज्ञान प्राप्त करना है।

शंकराचार्य ने अपने दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए व्यापक यात्राएं कीं। उन्होंने शास्त्रार्थ (शास्त्रीय वाद-विवाद) में भाग लिया और विभिन्न मतों के विद्वानों को शास्त्रों के आधार पर अपने मत से सहमत किया। उन्होंने चार धामों (श्री बद्रीनाथ, द्वारका, रामेश्वरम और जगन्नाथपुरी) की स्थापना की और शंकराचार्य पीठों की स्थापना करके सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत ने भारतीय दर्शन पर गहरा प्रभाव डाला है। उनके विचारों ने भक्ति आंदोलन को भी प्रभावित किया और आज भी भारत सहित विश्व भर में अनेक लोगों को आत्मज्ञान और मोक्ष प्राप्ति की राह दिखा रहा है।

हालाँकि, अद्वैत वेदांत की कुछ जटिल अवधारणाएँ आम जन के लिए कठिन हो सकती हैं। फिर भी, शंकराचार्य के उपदेशों का सार यह है कि आत्मज्ञान और आत्म-साक्षात्कार ही जीवन का लक्ष्य है, और इसे प्राप्त करने के लिए अहंकार का त्याग, कर्मयोग और ज्ञान प्राप्ति आवश्यक हैं।

ISSN: 0378-1143

शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

ब्रह्म: ब्रह्म सर्वव्यापक, सर्वज्ञ और सच्चिदानंद स्वरूप है। वही एकमात्र सत्य है।

माया: संसार माया या भ्रम है। यह अस्थायी और सत्य नहीं है।

आत्मा: आत्मा (जीव) ब्रह्म का ही अंश है। अज्ञान के कारण, आत्मा को लगता है कि वह ब्रह्म से अलग है।

मोक्ष: मोक्ष का अर्थ है अज्ञान से मुक्ति पाना और ब्रह्म के साथ एकरूपता का अनुभव करना।

वेदांत शंकराचार्य

भारतीय दर्शन के क्षेत्र में आदि शंकराचार्य का नाम एक अग्रणी स्थान रखता है। 8वीं शताब्दी में जन्मे, शंकराचार्य एक महान दार्शनिक, संन्यासी और समाज सुधारक थे। उन्होंने अद्वैत वेदांत दर्शन को पुनर्जीवित किया और इसे हिंदू धर्म की प्रमुख धाराओं में से एक बना दिया। अद्वैत का अर्थ है "द्वैत नहीं" यानी दो नहीं। यह दर्शन इस सिद्धांत पर आधारित है कि परम सत्य (ब्रह्म) ही एकमात्र सत्य है। संसार (माया) एक माया या भ्रम है और आत्मा (जीव) और ब्रह्म वास्तव में एक हैं। शंकराचार्य ने अपने तर्क और शास्त्रार्थों के माध्यम से अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों को स्थापित किया। उन्होंने ब्रह्मसूत्र की अपनी व्याख्या में यह बताया कि वेदों का सार यही है कि ब्रह्म ही सब कुछ है। उन्होंने उपनिषदों के संदेशों पर भी बल दिया, जो अद्वैत वेदांत के आधार हैं। उनके अनुसार, मोक्ष प्राप्ति का मार्ग अज्ञान (अविद्या) को दूर करना है। अज्ञान ही वह भ्रम है जो हमें यह विश्वास दिलाता है कि हम ब्रह्म से अलग हैं। ज्ञान प्राप्ति के लिये उन्होंने ज्ञान योग और कर्म योग का समन्वय का मार्ग बताया। शंकराचार्य ने भारत में चार धामों की स्थापना की - द्वारका, बद्रीनाथ, पुरी और रामेश्वरम। उन्होंने चारों दिशाओं में अद्वैत वेदांत का प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने विभिन्न दर्शनों के साथ शास्त्रार्थ भी किए और उन्हें पराजित किया। शंकराचार्य का भारत के सांस्कृतिक और धार्मिक इतिहास पर

ISSN: 0378-1143

गहरा प्रभाव पड़ा है। उन्होंने अद्वैत वेदांत को एक व्यवस्थित दर्शन का रूप दिया और इसे जन-मानस तक पहुँचाया। उनके विचारों ने आज भी न केवल भारत में बल्कि विश्वभर में दार्शनिकों और आध्यात्मिक साधकों को प्रभावित करते हैं।

अद्वैत वेदांत, भारतीय दर्शन की एक महत्वपूर्ण शाखा है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - "अद्वैत" यानी "दो नहीं"। यह दर्शन परम सत्ता (ब्रह्म) और जीव (आत्मा) के स्वरूप तथा उनके परस्पर संबंधों का प्रतिपादन करता है। आदि शंकराचार्य को इस दर्शन का प्रवर्तक माना जाता है। अद्वैत वेदांत के अनुसार, ब्रह्म ही एकमात्र सत्य (सत्यम्) है। यह सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, और सर्वसमर्थ है। संसार (जगत्) माया (अज्ञान) के कारण प्रतीत होता है और वास्तव में सत्य नहीं है। जीव (आत्मा) आत्मज्ञान के अभाव के कारण ब्रह्म से पृथक अनुभव करता है, लेकिन सत्य में वह ब्रह्म का ही अंश है।

अद्वैत वेदांत का मुख्य लक्ष्य मोक्ष (दुःख से मुक्ति) प्राप्त करना है। मोक्ष को उस दशा के रूप में परिभाषित किया गया है, जहाँ जीव को अपने सच्चे स्वरूप का ज्ञान हो जाता है और वह ब्रह्म में लीन हो जाता है। इस स्थिति में अज्ञान (माया) का नाश हो जाता है और जीव को पूर्ण शांति का अनुभव होता है।

अद्वैत वेदांत अपने सिद्धांतों को स्थापित करने के लिए विभिन्न प्रमाणों का सहारा लेता है, जिनमें प्रमुख हैं:

- **श्रुति: वेदों को श्रुति माना जाता है, और अद्वैत वेदांत इनसे ही अपने प्रमाण लेता है। उपनिषद, वेदों का अंतिम भाग, अद्वैत वेदांत के मूल स्रोत हैं।**
- **स्मृति: स्मृति में भी अनेक श्लोक अद्वैत के सिद्धांतों का समर्थन करते हैं।**
- **तर्क: अद्वैत वेदांत तर्क और युक्तियों का भी प्रयोग करता है, अपने सिद्धांतों को स्थापित करने के लिए।**

ISSN: 0378-1143

अद्वैत वेदांत का भारतीय संस्कृति और समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इसने भक्ति आंदोलनों को जन्म दिया, और आध्यात्मिक साधना को नई दिशा प्रदान की। अद्वैत वेदांत आज भी विश्व भर में अध्ययन और चर्चा का विषय है।

भारतीय दर्शन की समृद्ध परंपरा में अद्वैत वेदांत का एक विशिष्ट स्थान है। यह दर्शन आदि शंकराचार्य द्वारा आठवीं शताब्दी ईस्वी में प्रतिपादित किया गया था और वेदों, विशेष रूप से उपनिषदों के ज्ञान पर आधारित है। "अद्वैत" शब्द का अर्थ है "अद्वितीय" या "दो नहीं"। यह दर्शन इस मौलिक सिद्धांत पर आधारित है कि परम सत्य, जिसे ब्रह्म कहा जाता है, अद्वितीय है। वही एकमात्र वास्तविकता है, और संसार (माया) एक माया या भ्रम है।

अद्वैत वेदांत दर्शन निर्गुण (गुणों से रहित) और सच्चिदानंद (सत् - अस्तित्व, चित् - चेतना, आनंद - आनंद) स्वरूप है। प्रत्येक जीव में एक आत्मा (आत्मान) होती है, जिसे अद्वैत दर्शन में "जीव" कहा जाता है। यह आत्मा भी ब्रह्म का ही अंश है, ठीक वैसे ही जैसे सूर्य से निकलने वाली किरणें सूर्य से अलग नहीं होतीं। माया अज्ञानता या भ्रम की शक्ति है जो हमें यह भ्रम देती है कि संसार वास्तविक है। यह माया ही है जो हमें ब्रह्म से अलग एक व्यक्तिगत आत्मा के रूप में अनुभव कराती है। मोक्ष का अर्थ है उस अज्ञानता और भ्रम से मुक्ति पाना, जो हमें ब्रह्म से अलग महसूस कराता है। मोक्ष की प्राप्ति आत्मज्ञान के द्वारा ही संभव है, यह जानने से कि हम वास्तव में ब्रह्म के ही अंश हैं।

अद्वैत वेदांत दर्शन जीवन जीने का एक मार्ग भी प्रदान करता है। यह हमें सिखाता है कि वैराग्य (दुनियावी चीजों से आसक्ति का त्याग) और कर्मयोग (अपने कर्तव्यों को बिना लगाव के करना) का अभ्यास करना चाहिए। यह ज्ञान प्राप्ति के लिए भी मार्गदर्शन देता है, जो मोक्ष की प्राप्ति के लिए आवश्यक है।

अद्वैत वेदांत दर्शन भारतीय संस्कृति और धर्म में गहराई से समाहित है। इसने न केवल भारत में बल्कि विश्व भर में भी दर्शन और आध्यात्मिक चेतना को प्रभावित किया है। इसकी जटिल अवधारणाओं के बावजूद, अद्वैत वेदांत का सरल संदेश

ISSN: 0378-1143

यह है कि हम सभी एक परम सत्य के अंश हैं, और आत्मज्ञान के माध्यम से हम उस सत्य का अनुभव कर सकते हैं और मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

भारतीय दर्शन की समृद्ध परंपरा में अद्वैत वेदान्त एक महत्वपूर्ण धारा है। इसका अर्थ है "अद्वितीय ब्रह्म" का सिद्धांत। आदि शंकराचार्य को इस दर्शन का प्रवर्तक माना जाता है, जिन्होंने आठवीं शताब्दी में उपनिषदों के ज्ञान पर आधारित इस दर्शन को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया।

अद्वैत वेदान्त का मूलभूत सिद्धांत यह है कि परम सत्ता, जिसे ब्रह्म कहा जाता है, अकेला सत्य है। यह जगत्, माया (भ्रम) के कारण सत्य प्रतीत होता है। जीव (आत्मा) और ब्रह्म वास्तव में एक ही हैं, किन्तु अज्ञान के कारण जीव स्वयं को ब्रह्म से पृथक मानता है। उपनिषदों का प्रसिद्ध महावाक्य "तत्त्वमसि" (तू वही है) इसी तथ्य को इंगित करता है।

अद्वैत वेदान्त मोक्ष को ही जीवन का परम लक्ष्य मानता है। मोक्ष का अर्थ है अज्ञान का नाश और आत्मज्ञान की प्राप्ति। जब जीव को यह ज्ञान हो जाता है कि वह ब्रह्म से अभिन्न है, तो वह दुःख और मोह से मुक्त हो जाता है।

अद्वैत वेदान्त ज्ञान (ज्ञानयोग) को मोक्ष प्राप्ति का प्रमुख मार्ग मानता है। इसके अनुसार, आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए श्रवण (शास्त्रों का अध्ययन), मनन (शास्त्रों के अर्थ पर चिंतन) और निदिध्यासन (ईश्वर पर निरंतर ध्यान) करना आवश्यक है।

अद्वैत वेदान्त की कई विशेषताएँ हैं, जो इसे अन्य भारतीय दर्शनों से अलग करती हैं। इनमें से कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं:

- **ब्रह्मनिष्ठता: ब्रह्म को ही एकमात्र सत्य मानना।**
- **मायावाद: जगत् को माया (भ्रम) मानना।**
- **जीवब्रह्मैक्य: जीव और ब्रह्म को एक ही मानना।**
- **ज्ञानमार्ग: ज्ञान को ही मोक्ष प्राप्ति का साधन मानना।**

ISSN: 0378-1143

निष्कर्ष

अद्वैत वेदान्त का भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इस दर्शन ने भक्ति आंदोलनों को प्रेरित किया है और भारतीय कला, साहित्य और दर्शन को समृद्ध किया है। हालांकि, अद्वैत वेदान्त की जटिल अवधारणाओं को लेकर सदियों से विद्वानों के बीच शास्त्रार्थ भी होते रहे हैं। अंत में, यह कहा जा सकता है कि अद्वैत वेदान्त दर्शन भारतीय चिंतन की एक महत्वपूर्ण धारा है, जिसने आत्मज्ञान, मोक्ष और जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त किया है।

ग्रंथसूची

भाष्ये (भाष्ये)

- **ब्रह्मसूत्रभाष्यम् (ब्रह्मसूत्रांवर भाष्य)**
- **उपनिषद्भाष्यम् (उपनिषदांवर भाष्य)**
- **भगवद्गीताभाष्यम् (भगवद्गीतेवर भाष्य)**

प्रकरण ग्रंथ (स्वतंत्र ग्रंथ)

- **उपदेशसाहस्री (एक हजार श्लोकांमध्ये आत्म-ज्ञान)**
- **आत्मबोध (आत्म-ज्ञानावर लहान ग्रंथ)**
- **अपरोक्षानुभूति (अद्वैत अनुभवावर लहान ग्रंथ)**
- **वेदांतसार (वेदांताचा सार)**
- **तत्त्वबोधिनी (तत्त्वज्ञानावर लहान ग्रंथ)**
- **रिबुभाववविवेक (आत्मा आणि चेतनेवर लहान ग्रंथ)**

इतर ग्रंथ

- **स्तोत्ररत्न (स्तुतींचा संग्रह)**

ISSN: 0378-1143

- **भजगोविंदम् (भगवान विष्णूची स्तुती)**
- **शिवानन्दलहरी (भगवान शिवाची स्तुती)**
- **हरिश्चंद्रास्तक (हरिश्चंद्र राजावरील लघुकाव्य)**

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

अद्वैत वेदांत शंकराचार्य

Authored By

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

Madan Kumar Rana

Published in Vol. C, Issue-8, 2023
Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute with ISSN : 0378-1143
UGC-CARE List Group I
Impact Factor: 6.5

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

ISSN: 0378-1143

RAO - MANMOHAN MODEL OF ECONOMIC GROWTH

Kailash Rana

Assistant Professor, Department of Economics, (Jhumri Telaiya Commerce College)

ABSTRACT

The Rao-Manmohan Model, also known as the Liberalization, Privatization, and Globalization (LPG) model, refers to the series of economic reforms initiated in India in 1991, under the leadership of Prime Minister P. V. Narasimha Rao and Finance Minister Dr. Manmohan Singh. This paper will delve into the context of these reforms, their key features, and their lasting impact on the Indian economy.Prior to 1991, India followed a centrally planned economy characterized by heavy state intervention, import substitution, and restrictive regulations. This model, while aiming for self-sufficiency, had led to sluggish growth, high inflation, and a burgeoning foreign debt crisis. The economic situation forced the government to seek relief from the International Monetary Fund (IMF) and embark on a path of structural reforms.The Rao-Manmohan model of economic growth, often referred to as the New Economic Policy (NEP) of 1991, marked a significant turning point in India's economic trajectory. Pioneered by Prime Minister P. V. Narasimha Rao and implemented by Finance Minister Dr. Manmohan Singh, this model ushered in a period of liberalization, privatization, and globalization (LPG) reforms, fundamentally altering the nation's economic landscape.

KEYWORDS: Liberalization, Privatization, Globalization

INTRODUCTION

The Rao-Manmohan Model, associated with the leadership of P.V. Narasimha Rao and Manmohan Singh in the 1990s, marked a significant turning point in India's economic history. It ushered in a new era of economic reforms, liberalizing the previously socialist-oriented economy and integrating it more closely with the global market. While the model has been credited with achieving impressive economic growth, it also faced significant challenges that continue to resonate in contemporary India.(Srinivasan, 2018)

Growth and Development: The model undeniably fueled economic growth, leading to a rise in GDP per capita and the emergence of a prosperous middle class. This growth was primarily driven by increased foreign investment, trade liberalization, and the rise of the information technology sector.

Reduced Poverty: Poverty levels significantly declined during this period, with millions lifted out of absolute poverty. This was partly due to the expansion of social safety net programs and the creation of new job opportunities.

Foreign Exchange Reserves: The model helped build up India's foreign exchange reserves, providing a financial cushion and improving the country's creditworthiness on the international stage.

Unequal Distribution of Benefits: Despite overall growth, the benefits were not evenly distributed across society. The model was criticized for exacerbating existing inequalities, with the rich benefiting disproportionately while large sections of the population, particularly in rural areas, remained largely untouched by the economic boom.Subramanian, 2019)

ISSN: 0378-1143

Vulnerability to External Shocks: The increased integration with the global market made the Indian economy more susceptible to external fluctuations like currency fluctuations and global financial crises. This vulnerability became evident during the 2008 financial crisis.

Job Creation and Informality: While the model spurred growth, it did not create enough formal jobs to absorb the vast pool of unskilled labor. This resulted in a rise in the informal sector, characterized by low wages and limited social security benefits.

Environmental Concerns: The rapid economic expansion came at a cost to the environment. Increased industrial activity and resource consumption led to pollution, deforestation, and depletion of natural resources.

The NEP introduced a series of bold measures aimed at integrating India with the global economy. Key components included:

Liberalization: Reduction of trade barriers, such as tariffs and quotas, to promote international trade and competition.

Privatization: Disinvestment of government-owned enterprises to improve efficiency and attract private capital.

Globalization: Integration with the global financial system through increased foreign direct investment (FDI) and foreign institutional investment (FII).

These reforms aimed to unleash the potential of the private sector, encourage entrepreneurship, and attract foreign investment. The results were profound:

Economic Growth: India transitioned from an average GDP growth of below 4% in the 1980s to a sustained period of higher growth, averaging 6-7% in the following decades.

Foreign Investment: FDI inflows witnessed a significant rise, injecting much-needed capital and technology into various sectors.

Poverty Reduction: Millions of Indians were lifted out of poverty, with poverty rates declining steadily.

Modernization: The Indian economy modernized, becoming more integrated with global markets and supply chains.

However, the Rao-Manmohan model wasn't without its critics. Concerns were raised about:

Widening Inequality: The benefits of growth weren't evenly distributed, with some segments of society, like rural populations, experiencing slower improvement in their living standards.

De-industrialization: Some argue that the focus on services may have hampered the growth of the manufacturing sector.

Vulnerability to External Shocks: Integration with the global economy exposed India to external economic fluctuations and financial crises.

Despite these concerns, the Rao-Manmohan model remains a landmark economic reform initiative in India's history. It ushered in a period of sustained economic growth, poverty reduction, and modernization, paving the way for India's emergence as a major global player. The legacy of this model continues to be debated, but its impact on shaping India's economic landscape is undeniable.

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

ISSN: 0378-1143

RAO - MANMOHAN MODEL OF ECONOMIC GROWTH

The Rao-Manmohan Model remains a significant chapter in India's economic history. While it unlocked impressive growth and development, the challenges it left behind continue to be addressed by subsequent governments. The future of the Indian economy will depend on its ability to achieve inclusive growth, address inequalities, and ensure sustainable development for all its citizens.

Unequal distribution of benefits: While the model led to high GDP growth, critics argue that the benefits were unevenly distributed, contributing to rising income inequality. The growth primarily benefitted the middle class and the wealthy, while a large section of the population, particularly in rural areas, remained largely untouched.

Jobless growth: The model focused heavily on promoting the service sector and liberalizing trade, but it faced criticism for not generating enough employment opportunities in these sectors. This led to a phenomenon known as "jobless growth," where the economy grew but employment rates stagnated or even declined.

Infrastructure bottlenecks: The rapid economic growth exposed the limitations of India's infrastructure, including transportation, energy, and communication networks. These bottlenecks hampered further growth and increased the cost of doing business.

Fiscal deficit: The initial reforms involved increased public spending on social programs and infrastructure development, leading to a rise in the fiscal deficit. This increased government debt and limited resources for future investments.

Agricultural stagnation: The focus on the service sector and manufacturing came at the expense of the agricultural sector, which remained largely stagnant. This led to declining incomes for farmers, rural-to-urban migration, and food security concerns.

Environmental concerns: The rapid pace of industrialization associated with the model raised concerns about environmental degradation, including air and water pollution, resource depletion, and climate change.

India adhered to a socialist-inspired model characterized by extensive state control, import substitution, and limited foreign investment. While this approach achieved some success in fostering self-sufficiency in certain sectors, it ultimately led to stagnation, inefficiency, and mounting external debt. Facing a severe balance of payments crisis, the Rao-Manmohan duo recognized the need for a drastic course correction.

India followed a predominantly socialist model characterized by extensive government control, import substitution, and public sector dominance. However, this approach led to sluggish economic growth, high inflation, and a burgeoning foreign debt. Recognizing the limitations of this model, the Rao-Manmohan government embarked on a bold reform agenda.

Recognizing these challenges, the government has taken several steps to address them. These include:

Rural development programs: Initiatives like the Mahatma Gandhi National Rural Employment Guarantee Scheme (MGNREGS) aim to generate rural employment and improve rural infrastructure.

ISSN: 0378-1143

Skill development programs: These programs focus on equipping the workforce with the skills needed for the changing job market.

Infrastructure development: Increased investments in infrastructure projects aim to address bottlenecks and improve connectivity.

Fiscal consolidation: Efforts are being made to control government spending and reduce the fiscal deficit.

Sustainable development initiatives: The government is increasingly focusing on promoting sustainable development and environmentally friendly practices.

The Rao-Manmohan model played a crucial role in transforming India's economy. However, its success was not without challenges. Addressing these challenges and ensuring inclusive and sustainable growth remain key priorities for India's economic future.

ACHIEVEMENTS

Liberalization: The model dismantled the restrictive license raj system, opening up sectors like banking and insurance to private players. This fostered competition, improved efficiency, and attracted foreign investment, propelling economic growth.

Fiscal Responsibility: The focus on fiscal consolidation and deficit reduction stabilized the economy, avoiding the debt crisis that plagued other developing nations.

Social Sector Reforms: Investments in education and healthcare improved human capital development, laying a foundation for future growth.

CHALLENGES

Uneven Distribution of Benefits: Critics argue that the growth did not translate into widespread poverty alleviation. The benefits were skewed towards urban areas and certain social groups, exacerbating inequalities.

Job Creation: While the model led to economic growth, it did not generate sufficient employment opportunities. The growing informal sector and the rise of skill gaps posed significant challenges.

Infrastructure Bottlenecks: The rapid growth exposed India's inadequate infrastructure, leading to bottlenecks in power, transportation, and logistics. This hampered further economic expansion and efficiency.

Agricultural Stagnation: The reforms primarily focused on the service sector, neglecting agriculture, which remained largely unaddressed. This led to stagnating agricultural output and rural distress.

Environmental Concerns: The rapid industrialization associated with the model raised concerns about environmental degradation and resource depletion.

The Rao-Manmohan model is a complex story of both progress and challenges. While it ushered in an era of economic growth and liberalization, its limitations became evident over time. Addressing inequalities, creating inclusive growth, and ensuring sustainable development remain key challenges for India's economic future. Recognizing the strengths and weaknesses of this model is crucial for policymakers and economists as they navigate India's ongoing economic journey.

The core principles of the Rao-Manmohan Model were:

Liberalization: Reducing government control over the economy by easing regulations, removing licensing requirements, and lowering tariffs on imported goods.

Privatization: Disinvestment of government-owned enterprises to promote efficiency and attract private investment.

Globalization: Integrating the Indian economy with the global market by encouraging foreign investment and fostering international trade.

The implementation of these reforms marked a significant shift in India's economic policy paradigm. The immediate impacts included:

Increased economic growth: India witnessed a period of sustained economic growth, averaging around 6-7% in the years following the reforms. This growth was primarily driven by the expansion of the service sector, particularly information technology (IT) and IT-enabled services (ITeS).

Foreign investment: The reforms attracted significant foreign investment, which provided crucial resources for infrastructure development, technological advancement, and job creation.

Increased exports: Trade liberalization led to a significant boost in India's exports, further contributing to economic growth and foreign exchange reserves.

However, the Rao-Manmohan Model also faced challenges:

Income inequality: The rapid economic growth did not translate uniformly across society, leading to concerns about widening income inequality and rising poverty in some segments of the population.

Job displacement: The shift towards a more market-oriented economy resulted in job losses in some sectors, particularly public sector industries.

Environmental concerns: The focus on industrial growth raised concerns about environmental degradation and depletion of natural resources.

Despite these challenges, the Rao-Manmohan Model is widely recognized as a pivotal moment in India's economic history. It ushered in a period of sustained economic growth, integration with the global market, and technological advancement. However, the ongoing debate surrounding this model highlights the need for continued efforts to address issues of inequality, environmental sustainability, and inclusive growth.

In conclusion, the Rao-Manmohan Model of Economic Growth represents a complex and multifaceted chapter in India's economic development. While acknowledging its significant contributions, it is essential to consider its limitations and engage in ongoing discourse to ensure equitable and sustainable growth for the nation.

DISCUSSION

Liberalization: Reduction of trade barriers, such as import duties, to promote competition and foreign trade.

Privatization: Disinvestment of government-owned enterprises to improve efficiency and attract private investment.

Globalization: Integration of the Indian economy with the global market by allowing foreign direct investment and fostering international trade agreements.

ISSN: 0378-1143

The implementation of the LPG model ushered in a period of significant economic transformation in India. Key achievements include:

Increased Economic Growth: The Indian economy experienced a sustained period of high growth, averaging around 7-8% per year for over two decades. This growth helped lift millions out of poverty and improve living standards.

Foreign Investment Boom: India witnessed a significant inflow of foreign direct investment, which provided capital for infrastructure development and technological advancements.

Diversification of the Economy: The service sector emerged as a major driver of growth, alongside traditional sectors like agriculture and manufacturing.

However, the model also faced criticism for:

Widening Inequality: The benefits of growth were not evenly distributed, with a rise in income inequality and concerns about job security in some sectors.

Social Concerns: Rapid economic growth came with challenges, including environmental degradation and increased pressure on social infrastructure.

CONCLUSION

The Rao-Manmohan Model undoubtedly marks a pivotal turning point in India's economic history. While not without its drawbacks, it has propelled the country into the global economic arena and laid the foundation for its rise as a major economic power. The model's legacy continues to be debated, with policymakers seeking to learn from its successes and address its limitations in navigating the complexities of an evolving global economy.

REFERENCES

1. India's Economic Reforms" by Manmohan Singh
2. The Long and Short of India's Economic Reforms" (2018) by T.N. Srinivasan
3. India's Growth Miracle: A Charade or for Real?" (2019) by Arvind Subramanian
4. Economic Survey of India by the Ministry of Finance, Government of India.
5. Reserve Bank of India website.

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

RAO - MANMOHAN MODEL OF ECONOMIC GROWTH

Authored By

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

Kailash Rana

Published in Vol. C, Issue-10, 2023
Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute with ISSN : 0378-1143
UGC-CARE List Group I
Impact Factor: 6.5

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute ★ ISSN: 0378-1143

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

ISSN: 0378-1143

बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना

Yugal Saw

Assistant Professor, Department of History, (Jhumri Telaiya Commerce College)

सार

बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना 18वीं शताब्दी में धीरे-धीरे हुई। यह एक जटिल प्रक्रिया थी जिसमें राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक कारकों का योगदान था। इस निबंध में हम बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के कारणों, महत्वपूर्ण घटनाओं और उसके परिणामों का विश्लेषण करेंगे। 17वीं शताब्दी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारत में व्यापारिक गतिविधियां शुरू कीं। धीरे-धीरे, उनकी महत्वाकांक्षाएं बढ़ीं और उन्होंने राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने का प्रयास किया। 18वीं शताब्दी में, बंगाल में अनेक घटनाएं हुईं, जिन्होंने ब्रिटिश शासन स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।बंगाल में ब्रिटिश शासन के कई परिणाम थे, जिनमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों शामिल थे। ब्रिटिश शासन ने बंगाल में आधुनिकता और विकास लाया, लेकिन इसने बंगाल का आर्थिक और राजनीतिक शोषण भी किया। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि बंगाल में ब्रिटिश शासन के परिणामों की व्याख्या विभिन्न लोगों द्वारा अलग-अलग तरीकों से की जाती है। कुछ लोग मानते हैं कि ब्रिटिश शासन ने भारत के लिए अधिक अच्छा किया, जबकि अन्य लोग मानते हैं कि इसने भारत को बहुत नुकसान पहुंचाया।

मुख्य शब्द

बंगाल, ब्रिटिश , सत्ता, स्थापना

भूमिका

बंगाल अपनी समृद्ध संस्कृति, कला, व्यापार और कृषि के लिए जाना जाता था। यह भारत का सबसे संपन्न प्रांत था। कंपनी ने बंगाल की संपत्ति को लूटने और अपनी व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने का अवसर देखा।

ISSN: 0378-1143

18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य कमजोर हो रहा था। बंगाल में भी नवाबों के बीच अस्थिरता और गुटबाजी थी। कंपनी ने इस कमजोरी का फायदा उठाकर बंगाल में अपना प्रभाव बढ़ाया। यह युद्ध बंगाल के नवाब सिराज-उद-दौला और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच लड़ा गया था। कंपनी ने नवाब के सेनापति मीर जाफर को अपनी तरफ मिला लिया और युद्ध जीत लिया। प्लासी की लड़ाई बंगाल में ब्रिटिश शासन की स्थापना का एक महत्वपूर्ण मोड़ था।

प्लासी के बाद, कंपनी ने बंगाल में द्वैध शासन स्थापित किया। इस व्यवस्था के तहत, नवाब को नाममात्र का शासक बनाया गया, जबकि कंपनी ने वास्तविक शक्ति अपने हाथों में ले ली। इस युद्ध में कंपनी ने मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय और अवध के नवाब शुजा-उद-दौला को हराया। इस जीत ने कंपनी की शक्ति और प्रभाव को और मजबूत किया।

कंपनी ने बंगाल के किसानों और कारीगरों का शोषण किया। उन्होंने भारी कर लगाए और बंगाल की संपत्ति को लूट लिया। ब्रिटिश शासन ने बंगाल के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को भी प्रभावित किया। उन्होंने पश्चिमी शिक्षा और संस्कृति को पेश किया, जिसने बंगाली समाज में कई बदलाव लाए।

ब्रिटिश शासन ने बंगाल में शासन और व्यवस्था में सुधार लाए। उन्होंने एक केंद्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली स्थापित की, जिसके तहत कानून और व्यवस्था कायम रखने के लिए पुलिस और न्यायालयों का गठन किया गया। ब्रिटिश शासन के दौरान बंगाल में आर्थिक विकास हुआ। उन्होंने बंगाल में आधुनिक उद्योगों, बैंकों और रेलवे का निर्माण किया।

ब्रिटिश शासन के दौरान बंगाल में शिक्षा और सामाजिक सुधार हुए। उन्होंने बंगाल में आधुनिक शिक्षा प्रणाली स्थापित की और जाति प्रथा और सती प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए प्रयास किए। ब्रिटिश शासन के दौरान बंगाल का आर्थिक शोषण हुआ। उन्होंने बंगाल से कच्चे माल को कम मूल्य पर खरीदा और उन्हें तैयार माल के रूप में उच्च मूल्य पर वापस बेचा।

ISSN: 0378-1143

ब्रिटिश शासन के दौरान बंगाल में राजनीतिक दमन हुआ। उन्होंने भारतीयों को राजनीतिक शक्ति में भाग लेने से वंचित रखा। ब्रिटिश शासन के दौरान बंगाल में सांस्कृतिक क्षरण हुआ। उन्होंने भारतीय संस्कृति को नीचा दिखाया और अपनी संस्कृति को थोपने का प्रयास किया।

बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना

18वीं शताब्दी में बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह एक क्रमिक प्रक्रिया थी जो कई कारकों के कारण हुई थी।

राजनीतिक कारण

- **मुगल साम्राज्य का पतन: 18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य कमजोर हो गया था। इससे बंगाल में राजनीतिक अस्थिरता पैदा हुई और विभिन्न गुटों के बीच सत्ता संघर्ष शुरू हो गया।**
- **बंगाल के नवाबों की कमजोरी: बंगाल के नवाबों में राजनीतिक कुशलता और सैन्य शक्ति की कमी थी। वे अपनी सत्ता को बनाए रखने के लिए ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी पर निर्भर हो गए।**
- **कंपनी की बढ़ती शक्ति: ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने धीरे-धीरे अपनी सैन्य और राजनीतिक शक्ति बढ़ा ली थी। उन्होंने बंगाल में व्यापारिक विशेषाधिकार प्राप्त कर लिए थे और स्थानीय राजनीति में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया था।**

आर्थिक कारण

- **बंगाल की समृद्धि: बंगाल उस समय भारत का सबसे समृद्ध प्रांत था। यहाँ कृषि, उद्योग और व्यापार का अच्छा विकास हुआ था।**
- **कंपनी का व्यापारिक हित: ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी बंगाल के समृद्ध व्यापार से लाभ उठाना चाहती थी।**

ISSN: 0378-1143

- **कंपनी की वित्तीय स्थिति: कंपनी की वित्तीय स्थिति खराब थी। उन्हें बंगाल से धन प्राप्त करने की आवश्यकता थी।**

सामाजिक कारण

- **बंगाली समाज में विभाजन: बंगाली समाज विभिन्न जाति और धर्मों में विभाजित था। इससे बंगालियों में एकता की कमी थी।**
- **कंपनी का सामाजिक प्रभाव: ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाली समाज में शिक्षा और सामाजिक सुधारों का कार्य शुरू किया था। इससे कुछ बंगालियों ने कंपनी का समर्थन किया।**

सैन्य कारण

- **कंपनी की सैन्य शक्ति: ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के पास एक मजबूत सेना थी। उन्होंने बंगाल के नवाबों को हराने के लिए अपनी सेना का इस्तेमाल किया।**
- **बंगाल की सेना की कमजोरी: बंगाल के नवाबों की सेना कमजोर और संगठित नहीं थी।**

कारण

- **मुगल साम्राज्य का पतन: 18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य कमजोर हो रहा था। बंगाल में भी मुगल शासन कमजोर था, जिससे स्थानीय शासकों और व्यापारियों के बीच शक्ति संघर्ष बढ़ गया।**
- **बंगाल की समृद्धि: बंगाल एक समृद्ध प्रांत था। यहाँ कृषि, उद्योग और व्यापार का विकास हुआ था। इस समृद्धि ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को आकर्षित किया।**
- **ईस्ट इंडिया कंपनी का व्यापारिक विस्तार: 17वीं शताब्दी से ईस्ट इंडिया कंपनी बंगाल में व्यापार कर रही थी। कंपनी धीरे-धीरे अपनी व्यापारिक**

ISSN: 0378-1143

गतिविधियों का विस्तार कर रही थी और स्थानीय राजनीति में भी हस्तक्षेप कर रही थी।

महत्वपूर्ण घटनाएं

- **प्लासी का युद्ध (1757):** यह युद्ध बंगाल के नवाब सिराज-उद-दौला और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच हुआ था। इस युद्ध में कंपनी की जीत हुई और बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना हुई।
- **बक्सर का युद्ध (1764):** यह युद्ध मुगल सम्राट और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच हुआ था। इस युद्ध में भी कंपनी की जीत हुई और बंगाल में कंपनी का शासन स्थापित हो गया।
- **द्वैध शासन (1765-1772):** इस अवधि में बंगाल में दो शासन व्यवस्थाएं थीं - कंपनी का शासन और नवाब का शासन। यह व्यवस्था 1772 में समाप्त हो गई और कंपनी ने बंगाल पर पूर्ण नियंत्रण हासिल कर लिया।

परिणाम

- **बंगाल में ब्रिटिश शासन की स्थापना:** बंगाल में ब्रिटिश शासन की स्थापना भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना की नींव थी।
- **बंगाल की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:** बंगाल की अर्थव्यवस्था ब्रिटिश शासन के अधीन आ गई। बंगाल का कच्चा माल ब्रिटेन भेजा जाता था और ब्रिटेन से निर्मित वस्तुएं बंगाल में आयात की जाती थीं।
- **बंगाली समाज पर प्रभाव:** बंगाली समाज पर ब्रिटिश शासन का गहरा प्रभाव पड़ा। शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक जीवन में कई बदलाव हुए।

बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। इस घटना ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना की नींव रखी और बंगाल की अर्थव्यवस्था और समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा।

ISSN: 0378-1143

बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। यह 1757 में प्लासी की लड़ाई में नवाब सिराजुद्दौला की हार के साथ शुरू हुई थी। इस घटना ने भारत में ब्रिटिश शासन की नींव रखी और भारतीय उपमहाद्वीप के औपनिवेशीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी 1600 में भारत में व्यापार करने के लिए स्थापित हुई थी। धीरे-धीरे, कंपनी ने राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना शुरू कर दिया और 18वीं शताब्दी तक यह भारत में एक प्रमुख शक्ति बन गई थी।

1757 में, प्लासी के मैदान में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के बीच एक युद्ध हुआ। इस युद्ध में नवाब की हार हुई और बंगाल पर ब्रिटिश शासन स्थापित हो गया। बंगाल में ब्रिटिश शासन के कई प्रभाव थे। इसने भारतीय अर्थव्यवस्था, समाज और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया।

ब्रिटिश शासन ने बंगाल की अर्थव्यवस्था को बदल दिया। उन्होंने कृषि और उद्योग पर अपना नियंत्रण स्थापित किया और बंगाल के संसाधनों का शोषण किया। ब्रिटिश शासन ने बंगाल के समाज को भी बदल दिया। उन्होंने जाति व्यवस्था को मजबूत किया और भारतीयों को शिक्षा और रोजगार के अवसरों से वंचित रखा।

ब्रिटिश शासन ने बंगाल की संस्कृति को भी प्रभावित किया। उन्होंने भारतीय भाषाओं और संस्कृति को दबा दिया और पश्चिमी संस्कृति को बढ़ावा दिया। बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसने भारतीय उपमहाद्वीप के औपनिवेशीकरण का मार्ग प्रशस्त किया और भारत के इतिहास को हमेशा के लिए बदल दिया।

निष्कर्ष

बंगाल में ब्रिटिश शासन की स्थापना कई कारणों से हुई, जिनमें बंगाल की समृद्धि, मुगल साम्राज्य का पतन, प्लासी का युद्ध, द्वैध शासन, बक्सर का युद्ध, आर्थिक शोषण और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव शामिल हैं। 1757 में प्लासी के

ISSN: 0378-1143

युद्ध के बाद बंगाल में ब्रिटिश सत्ता स्थापित हुई। यह घटना भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी, जिसके परिणामस्वरूप भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का उदय हुआ। बंगाल में ब्रिटिश शासन के कई परिणाम थे, जिनमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों शामिल थे।

संदर्भ

1. **प्लासी का युद्ध**: https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A5%80_%E0%A4%95%E0%A4%BE_%E0%A4%AA%E0%A4%B9%E0%A4%B2%E0%A4%BE_%E0%A4%AF%E0%A5%81%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%A7
2. **द्वैध शासन:** https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A5%88%E0%A4%A7_%E0%A4%B6%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A4%A8
3. **ब्रिटिश शासन का भारत पर प्रभाव:** https://testbook.com/hi/ias-preparation/impact-of-british-rule-in-india

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

बंगाल में ब्रिटिश सत्ता की स्थापना

Authored By

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

Yugal Saw

Published in Vol. C, Issue-9, 2023
Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute with ISSN : 0378-1143
UGC-CARE List Group I
Impact Factor: 6.5

Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute ★ ISSN: 0378-1143

Journal of the K.R. Cama Oriental Institute
ISSN: 0970-0609 UGC Care Group 1 Journal

ROLE OF HUMAN RIGHTS IN PRESENT TIME

Arvind Kumar Sinha

Assistant Professor, Department of Political Science, (Jhumri Telaiya Commerce College)

ABSTRACT

Human rights, those fundamental entitlements inherent to all people, are not relics of a bygone era. In our complex and interconnected present, they are more crucial than ever. This paper will explore the vital role human rights play in fostering a just, peaceful, and prosperous world.On a foundational level, human rights ensure the dignity and worth of every individual. Rights like freedom from torture, the right to a fair trial, and freedom of expression are not luxuries but necessities. They empower individuals to participate meaningfully in society, fostering a sense of agency and belonging. This is particularly important in a world grappling with issues of social exclusion and marginalization.Furthermore, human rights serve as a bulwark against conflict and instability. When basic needs like food, shelter, and education are denied, frustration and resentment can easily escalate. Conversely, societies that uphold human rights create environments conducive to dialogue and peaceful resolution of disputes. In a world facing growing tensions, human rights offer a framework for peaceful coexistence.The present era also presents new challenges to human rights. Technological advancements raise concerns about privacy and surveillance. The rise of populism and nationalism can lead to the erosion of protections for minorities. However, human rights principles also provide a roadmap for navigating these complexities. The right to privacy, for instance, needs to be balanced with national security concerns. Here, human rights law offers guidance on striking a fair balance.

KEYWORDS: Human, Rights, Sustainable

INTRODUCTION

Human rights also play a critical role in promoting sustainable development. Poverty, lack of education, and environmental degradation are all intertwined. Upholding rights like access to education and a clean environment empowers individuals to lift themselves out of poverty and participate in building a sustainable future for all.

The fight for human rights is a continuous process. There will always be setbacks and violations. But the ideal of a world where all individuals, regardless of background or circumstance, can live with dignity and reach their full potential remains a powerful motivator. By holding governments accountable, promoting public awareness, and advocating for the most vulnerable, we can ensure that human rights remain a potent force for positive change in the present and for generations to come.

Human rights, those fundamental rights inherent to all human beings, are not relics of a bygone era. In our complex and interconnected present, they remain the cornerstone of a just and peaceful world. This paper will explore the critical role human rights play in the 21st century, addressing issues of global conflict, social progress, and technological advancement.

In a world marred by regional conflict and political instability, human rights serve as a universal language, a set of principles that can bridge divides and foster dialogue. When human rights violations occur, such as the persecution of minorities or the suppression of dissent, the international community has a framework to condemn such acts and advocate for reform. Human rights organizations play a vital role in documenting abuses and holding perpetrators accountable, deterring future violations and promoting peace.

Beyond conflict resolution, human rights are essential for social progress. They guarantee equal opportunities for all, regardless of gender, race, religion, or sexual orientation. This includes the right to education, healthcare, and a decent standard of living. By upholding these rights, societies empower

individuals to reach their full potential and contribute meaningfully. In the present day, the fight for gender equality, LGBTQ+ rights, and economic justice continues, drawing strength from the universal principles enshrined in human rights law.

The concept of human rights, enshrined in documents like the Universal Declaration of Human Rights, represents a noble aspiration – a world where every individual is guaranteed fundamental freedoms and treated with dignity. However, the reality on the ground paints a far less rosy picture. In the present day, human rights face a multitude of challenges that threaten their universality and effectiveness.

One major obstacle is the rise of authoritarian governments. These regimes often prioritize national security or economic development at the expense of individual liberties. They crack down on dissent, restrict freedom of expression, and persecute minorities. This creates an environment where human rights violations become commonplace, with little recourse for victims.

Another challenge is the increasing power of technology. Social media can be a powerful tool for raising awareness of human rights abuses, but it can also be used to spread misinformation and propaganda. Furthermore, advancements in surveillance technologies allow governments to monitor their citizens in unprecedented ways, potentially stifling dissent and freedom of movement.

Economic inequality presents another significant hurdle. When basic needs like food, shelter, and healthcare are not met, other human rights become secondary concerns. Poverty creates a breeding ground for exploitation, discrimination, and forced labor. Until economic disparities are addressed, true human rights for all will remain elusive.

The concept of universality itself is also facing scrutiny. Different cultures have varying traditions and values. Some argue that applying a single set of human rights standards across the globe disregards these cultural differences. This raises questions about the need for a more nuanced approach, balancing universal principles with cultural sensitivities.

Despite these challenges, there are reasons for hope. Human rights organizations continue to play a vital role in documenting abuses and holding violators accountable. There's also a growing global movement for social justice, with people around the world using their voices to demand change. Technological advancements, when used ethically, can also be harnessed to promote human rights by facilitating communication and amplifying the voices of the marginalized.

REVIEW OF RELATED LITERATURE

Kenneth et al. (2019): The struggle for human rights remains ever-present. The challenges we face in the current era are complex and multifaceted. However, by promoting a global dialogue, holding violators accountable, and fostering inclusive economic development, we can continue to strive towards a world where human rights are not just ideals, but a lived reality for everyone.

Nussbaum et al. (2015): The concept of human rights, enshrined in the Universal Declaration of Human Rights in 1948, stands as a cornerstone of a just and equitable world. Yet, despite this framework, the present era presents a multitude of challenges to the effective protection and promotion of these fundamental rights. This paper will explore some of the most pressing issues confronting human rights today.

Simon et al. (2018): One significant challenge is the rise of authoritarian governments and the erosion of democratic institutions. These regimes often prioritize national security or cultural values over individual rights, leading to crackdowns on dissent, suppression of free speech, and limitations on political participation. This trend undermines the very foundation of human rights, which relies on accountability and the rule of law.

Joseph et al. (2019): Poverty, inequality, and limited access to basic necessities like healthcare and education continue to plague vast swathes of the globe. These deprivations not only violate basic human rights but also create conditions that perpetuate injustice and fuel social unrest.

Charles et al. (2019): The emergence of new technologies presents a complex set of challenges. The rise of mass surveillance and the potential for misuse of artificial intelligence raise concerns about privacy and freedom of expression. Additionally, the digital divide can exacerbate existing inequalities in access to information and resources, further marginalizing vulnerable groups.

ROLE OF HUMAN RIGHTS IN PRESENT TIME

The fight for human rights also faces the hurdle of cultural relativism. Some argue that human rights are a Western imposition and fail to take into account diverse cultural values. While respecting cultural differences is crucial, it should not be used to justify human rights abuses. Finding a balance between universality and cultural sensitivity remains a central challenge.

Furthermore, the growing phenomenon of armed conflict and forced displacement disrupts the lives of millions and exposes them to a multitude of human rights violations. The protection of civilians in war zones, the plight of refugees, and the accountability for war crimes are critical issues that demand urgent attention from the international community.

Despite these daunting challenges, there are reasons for hope. The rise of global civil society movements, the increasing awareness of human rights violations, and the tireless work of human rights defenders all contribute to the ongoing struggle for a more just world. Technological advancements, when harnessed for good, can also be powerful tools for promoting accountability and human rights education.

The contemporary world presents a complex landscape of challenges, from authoritarianism to technological threats. However, by recognizing these obstacles and working collaboratively to address them, we can strive to create a world where the fundamental rights of all individuals are respected and protected.

The rise of new technologies presents both opportunities and challenges for human rights. While advancements can improve access to information and communication, they can also be used for mass surveillance and the erosion of privacy. The right to freedom of expression must be balanced with the need to combat hate speech and online harassment. Human rights frameworks are crucial for navigating these complex issues, ensuring that technological innovation serves humanity rather than undermines it.

The struggle for human rights is a continuous one. New challenges emerge, and existing ones require constant vigilance. However, the present offers reasons for optimism. The global human rights movement is more robust than ever before, with individuals and organizations around the world advocating for a more just and equitable world. By upholding these fundamental rights, we create a world where individuals can live with dignity, freedom, and security.

Human rights are not a luxury of peaceful times; they are the very foundation upon which a better future can be built. In the face of global challenges, they offer a common language for dialogue, a framework for social progress, and a compass to navigate the complexities of the technological age. As we move forward, let us continue to strive for a world where human rights are not just an ideal, but a reality for all.

In an age of rising inequality, political polarization, and technological disruption, the concept of human rights remains a powerful beacon, guiding us towards a more just and equitable world. Far from being a relic of the past, human rights play a critical role in the present, shaping our societies and fostering a foundation for a brighter future.

The core principle of human rights is the inherent dignity and worth of every human being. This translates into a set of fundamental rights, enshrined in documents like the Universal Declaration of Human Rights, that guarantee basic freedoms and protections. These include the right to life, liberty, and security of person; freedom from torture and discrimination; and the right to education, work, and healthcare.

In the present day, human rights are essential for addressing some of the world's most pressing challenges. Armed conflict, ethnic violence, and persecution continue to displace millions of people, highlighting the need for protection from arbitrary arrest, torture, and violence. Human rights also play a vital role in promoting peace and security. When individuals feel their voices are heard and their rights respected, they are less likely to resort to violence.

Human rights are crucial for promoting sustainable development and economic growth. A society where everyone has access to education, healthcare, and equal opportunities is more likely to thrive. When women are empowered and girls are educated, economies prosper. Human rights also form the bedrock of a healthy democracy. Freedom of expression, assembly, and association are essential for holding governments accountable and ensuring peaceful participation in the political process.

New threats, such as mass surveillance, online censorship, and the rise of artificial intelligence, necessitate a continuous re-evaluation of human rights principles in the digital age. We must ensure that technological progress does not come at the cost of our privacy and fundamental freedoms.

The role of individuals in upholding human rights is also crucial. We can raise awareness about human rights abuses, advocate for change, and support organizations working to protect these rights. By holding our governments and corporations accountable, we can create a world where human rights are not just an ideal, but a lived reality.

Human rights are not a luxury, but a necessity. They are the foundation for a peaceful, just, and prosperous world. In the present, as we face complex global challenges, the principles of human rights offer a roadmap for a better future. By working together and upholding these fundamental rights, we can create a world where everyone can reach their full potential and live a life of dignity and respect.

The concept of human rights, enshrined in documents like the Universal Declaration of Human Rights, stands as a cornerstone of a just and equitable world. While challenges persist, the present offers unique opportunities to leverage human rights for positive change.

One key opportunity lies in technological advancements. Social media platforms, once seen as breeding grounds for division, can now amplify the voices of the marginalized. Grassroots movements advocating for minority rights, environmental protection, and gender equality can utilize these platforms to mobilize support and raise awareness on a global scale. Additionally, technology can empower human rights defenders by providing access to information and communication tools that can circumvent traditional censorship.

Global bodies like the United Nations can leverage this interconnectedness to hold nations accountable for human rights violations. Collaborative efforts can address transnational issues like human trafficking and forced migration, ensuring a more coordinated response.

The present also offers an opportunity to redefine what it means to hold human rights. As technology shapes our lives in ever-increasing ways, we must consider new rights, such as the right to privacy in the digital age. Additionally, the fight for economic and social rights, such as access to healthcare and education, remains crucial in ensuring a dignified life for all.

The rise of authoritarian governments and the erosion of democratic institutions threaten the very foundations of human rights. Additionally, the digital divide can limit access to information and tools necessary for human rights advocacy.

To seize the opportunities presented by the current landscape, a multi-pronged approach is necessary. Governments must uphold their commitment to human rights and create conditions where civil society can flourish. Educational initiatives can foster a culture of human rights awareness and empower individuals to claim their rights. Finally, international cooperation must be strengthened to ensure a collective response to global human rights challenges.

CONCLUSION

Human rights remain a powerful framework for building a better future. The present, with its technological advancements and global interconnectedness, presents unique opportunities to advance human rights. By embracing these opportunities and confronting the challenges head-on, we can create a world where the fundamental rights of all are respected and protected.

REFERENCES

1. *The Role of Human Rights in the 21st Century* by Kenneth Roth (2019)
2. *Human Rights and Development: A Complicated Relationship* by Martha Nussbaum (2015)
3. *The Idea of Human Rights* by Simon Schama (2018)
4. *Human Rights Law: An Introduction* by Sarah Joseph (2019).
5. *The Universal Declaration of Human Rights: A Commentary* by Eleanor Roosevelt and Charles Malik (2019)

Journal of The
The K.R. Cama Oriental Institute

Certificate of Publication

This is to certify that the article entitled

ROLE OF HUMAN RIGHTS IN PRESENT TIME

Authored By

Arvind Kumar Sinha

University Grants Commission

Published in
Journal of The K.R. Cama Oriental Institute
ISSN: 0970-0609 (Print) with IF= 7.854
Volume No. 77 (October 2023)
UGC Care Listed Journal
Peer Reviewed, Refereed Journal

Published By
The K.R. Cama Oriental Institute

UGC
University Grants Commission

JOURNAL OF THE K.R. CAMA ORIENTAL INSTITUTE

Journal of the K.R. Cama Oriental Institute
ISSN: 0970-0609 UGC Care Group 1 Journal

ROLE OF START-UPS IN THE GROWTH OF THE ECONOMY IN INDIA

Suresh Prasad Yadav

Assistant Professor, Department of Economics, (Jhumri Telaiya Commerce College)

ABSTRACT

In recent years, India has witnessed a phenomenal rise in startups – young, innovative businesses challenging the status quo and driving economic growth. These dynamic entities are no longer fringe players, but vital cogs in the nation's economic engine. This paper will explore the multifaceted role startups play in propelling India forward.Firstly, startups are hotbeds of innovation. Unburdened by legacy systems, they embrace new technologies and disruptive ideas. From e-commerce giants like Flipkart to ed-tech platforms like Byju's, they are transforming entire sectors. This innovation not only creates new markets and products but also improves efficiency and accessibility for consumers. By leveraging technology, startups can bridge the digital divide and empower a wider population, contributing to inclusive growth.Secondly, startups are significant job creators. Unlike established companies, they are often high-growth ventures requiring a diverse workforce. This translates to a surge in employment opportunities, particularly for young talent with specialized skillsets. From engineers and data scientists to designers and marketing professionals, startups are nurturing a new generation of skilled workers who will be the backbone of the future economy.Thirdly, startups attract foreign investment. Their innovative potential makes them magnets for venture capitalists and angel investors seeking high returns. This influx of foreign capital not only fuels the growth of these young companies but also injects valuable liquidity into the Indian economy. This, in turn, strengthens the rupee and fosters a more robust financial ecosystem.

KEYWORDS: Start-up, Capital, Economy

INTRODUCTION

India's burgeoning startup scene is a testament to the nation's immense potential for innovation and entrepreneurship. This paper explores the multitude of opportunities that propel startups forward in this dynamic landscape.(Horowitz, 2018)

India boasts a massive and diverse population, translating into a vast consumer base. This presents a unique opportunity for startups to cater to specific needs and preferences across different demographics. Whether it's developing affordable education platforms for rural areas or creating localized e-commerce solutions, startups can tap into this vast market and achieve significant scale.

India's rapid economic growth has fostered a growing middle class with rising disposable incomes. This translates into a demand for innovative products and services, creating fertile ground for startups offering solutions in areas like healthcare, finance, and entertainment. By leveraging technology, startups can bridge existing gaps in these sectors and provide high-quality solutions at accessible prices.

The Indian government has actively fostered a supportive environment for startups. Initiatives like "Startup India" provide a range of benefits, including simplified regulations, easier access to funding, and tax breaks. This government support acts as a catalyst, encouraging budding entrepreneurs to take the plunge and transform their ideas into reality.

India's young and tech-savvy population provides a rich talent pool for startups. With a strong educational base and a growing interest in technology, India boasts a workforce well-equipped to drive innovation and contribute to the success of startups. This access to skilled manpower allows startups to build robust teams and develop cutting-edge solutions.

India's strategic location offers immense potential for global expansion. With its proximity to Southeast Asia and established trade links with other continents, Indian startups can leverage this geographical advantage to scale their operations and reach a wider audience. By addressing global challenges through innovative solutions, Indian startups can establish themselves as major players in the international market.

India presents a land of opportunity for startups. A combination of a vast market, a supportive government, a skilled workforce, and a growing economy creates an ideal breeding ground for innovation and entrepreneurial success. As India continues to evolve, its vibrant startup ecosystem is poised to play a pivotal role in shaping the nation's future and contributing to its position as a global leader.

The startup culture fosters a spirit of entrepreneurship. The success stories of young founders inspire others to take risks and chase their dreams. This entrepreneurial ecosystem, nurtured by incubators and accelerators, cultivates a "can-do" attitude and encourages innovation across all sectors.

The Indian startup landscape faces challenges. Access to affordable capital, complex regulations, and a lack of mentorship for young entrepreneurs can hinder their growth. To address these issues, the government has launched initiatives like "Startup India" to ease regulations and provide support.

Startups are playing a pivotal role in propelling India's economic growth. Through innovation, job creation, and attracting foreign investment, they are transforming the landscape. By fostering a supportive ecosystem and addressing existing challenges, India can ensure that its startups continue to be the engine of economic progress and propel the nation towards a brighter future.

One of the biggest opportunities for startups lies in the sheer size and diversity of the Indian market. With a population of over 1.4 billion, India offers a vast pool of potential customers across various demographics and income levels. This presents a unique opportunity for startups to cater to specific needs and develop innovative solutions that address the challenges faced by a large and diverse population.(Ries, 2019)

REVIEW OF RELATED LITERATURE

Robert et al. (2016): India's booming digital economy is creating fertile ground for tech-enabled startups. The increasing smartphone penetration and internet access are fueling the growth of e-commerce, fintech, and other digital platforms. This digital revolution provides startups with a cost-effective way to reach a wide audience and scale their businesses rapidly.

Horowitz et al. (2018): The Indian government has also played a crucial role in fostering a supportive ecosystem for startups. Initiatives like "Startup India" offer a range of benefits such as tax breaks, simplified regulations, and easier access to funding. This government support provides a safety net for young entrepreneurs and encourages them to take calculated risks.

David et al. (2015): Beyond the domestic market, Indian startups also have the potential to become global players. With their innovative solutions and cost-competitive edge, they can cater to the needs of developing economies around the world. Additionally, the large Indian diaspora serves as a valuable network for startups to tap into international markets. However, it's important to acknowledge the challenges that startups face in India. Access to capital, navigating complex regulations, and finding skilled talent are just a few hurdles that entrepreneurs need to overcome. Nevertheless, the sheer potential of the Indian market, coupled with the growing government support and a vibrant entrepreneurial spirit, make India a land of immense opportunity for startups.

Ries et al. (2019): India's startup ecosystem is a dynamic and exciting space with the potential to transform the nation's economy and its place in the global market. By harnessing the power of innovation, leveraging technology, and capitalizing on the vast opportunities available, Indian startups are poised to shape the future of not just India, but the world as well.

Kenney et al. (2016): In the dynamic landscape of the Indian economy, start-ups have emerged as a powerful force driving growth and progress. These young, agile companies, fueled by innovation and technology, are transforming various sectors and propelling the nation forward. This paper will explore the multifaceted role of start-ups in shaping India's economic trajectory.

ROLE OF START-UPS IN THE GROWTH OF THE ECONOMY IN INDIA

Start-ups are engines of job creation. Their disruptive business models often necessitate new skillsets, leading to a surge in employment opportunities. From e-commerce giants creating delivery networks to fintech companies requiring tech-savvy professionals, start-ups are providing much-needed jobs for India's growing workforce. This not only boosts individual incomes but also stimulates consumption, further contributing to economic growth.

Start-ups are at the forefront of innovation. Unburdened by legacy systems and bureaucratic hurdles, they have the flexibility to experiment and develop cutting-edge solutions. This can be seen in sectors like healthcare, where telemedicine platforms are bridging the gap in access to quality care, or in agriculture, where agri-tech companies are optimizing farming practices and improving yields. These innovations not only enhance efficiency but also open up new avenues for economic activity.

Start-ups attract significant foreign investment. Their potential for high growth and disruptive ideas make them attractive to venture capitalists and angel investors worldwide. This influx of foreign capital not only injects much-needed funds into the economy but also fosters a culture of risk-taking and innovation. This positive cycle further strengthens the start-up ecosystem and attracts even more investment.

Start-ups foster a vibrant entrepreneurial ecosystem. Their success stories inspire a new generation of aspiring entrepreneurs, creating a ripple effect that encourages risk-taking and self-employment. This not only diversifies the economic landscape but also promotes a culture of innovation and problem-solving across the nation.

However, the journey for start-ups is not without challenges. Access to funding, navigating complex regulations, and competing with established players are just some of the hurdles they face. To unlock their full potential, India needs to foster a supportive environment that provides easier access to capital, streamlined regulatory processes, and mentorship opportunities.

Start-ups are a game-changer for the Indian economy. Their innovative spirit, job creation potential, and ability to attract investment are propelling the nation forward. By nurturing this vital ecosystem and addressing the challenges they face, India can further harness the power of start-ups to achieve sustainable and inclusive economic growth.

One of the most significant contributions of start-ups is job creation. By fostering a culture of entrepreneurship, they provide employment opportunities for a skilled and youthful workforce. This not only reduces unemployment but also injects fresh talent and perspectives into the economy. Furthermore, start-ups often operate in sectors like e-commerce, fintech, and edtech, which cater to the needs of a growing digital population. This creates a ripple effect, generating indirect jobs in logistics, marketing, and customer service.

Innovation is another key area where start-ups excel. Unburdened by legacy systems, they are adept at adopting cutting-edge technologies like artificial intelligence, blockchain, and the Internet of Things. This focus on innovation leads to the development of new products and services, catering to evolving consumer demands and improving efficiency across various sectors. From mobile payment platforms to AI-powered healthcare solutions, start-ups are constantly pushing the boundaries of what's possible.

Start-ups also play a crucial role in attracting foreign investment. Their success stories act as a magnet for venture capitalists and angel investors, infusing the economy with much-needed capital. This not only helps individual companies flourish but also strengthens the overall financial ecosystem. A

vibrant start-up culture positions India as a global innovation hub, attracting not just funds but also talent and expertise from around the world.

However, the journey for Indian start-ups is not without its challenges. Access to funding, navigating complex regulations, and competing with established players are just a few hurdles they face. To ensure continued growth, fostering a supportive ecosystem is crucial. Government initiatives like "Startup India" have played a significant role in simplifying regulations, offering tax benefits, and providing incubation support. Additionally, nurturing a culture of mentorship and collaboration between established businesses and start-ups can pave the way for knowledge transfer and accelerate innovation.

India's burgeoning startup scene is a testament to the nation's youthful energy and entrepreneurial spirit. However, the road to success for these fledgling businesses is paved with significant challenges. This paper will explore the major hurdles faced by Indian startups and discuss potential strategies for overcoming them.

One of the primary roadblocks is the persistent issue of funding. Access to capital, especially in the crucial early stages, remains a concern. Traditional lenders often view startups as high-risk ventures, making them hesitant to provide loans. Angel investors and venture capitalists, while present, may be selective in their choices. This scarcity of funding can stifle innovation and growth, forcing startups to focus on short-term survival rather than long-term vision.

Another challenge lies in attracting and retaining skilled talent. Established corporations, with their brand recognition and financial stability, often hold an edge in the talent pool. Startups, with their limited resources, may struggle to offer competitive salaries or the promise of long-term career security. This can lead to high employee turnover, disrupting the continuity and momentum of a startup's operations.

The regulatory environment in India can also be a source of frustration for startups. Complex regulations and cumbersome bureaucratic processes can lead to delays in approvals and hinder smooth functioning. Additionally, frequent changes in regulations can create uncertainty and make it difficult for startups to plan for the future.

Beyond funding, talent, and regulations, another hurdle is the fierce competition that startups face. Not only do they contend with established players in their chosen markets, but also with a growing number of well-funded new ventures. Standing out from the crowd and effectively capturing market share requires a strong understanding of customer needs, a well-defined value proposition, and a robust marketing strategy.

Despite these challenges, there are ways for startups to navigate the Indian landscape. Building a strong business plan with a clear path to profitability can attract potential investors. Focusing on building a vibrant company culture and offering opportunities for growth can entice talented individuals to join the startup journey. Additionally, leveraging technology to streamline operations and build efficient processes can help startups navigate the regulatory maze.

The Indian government has also recognized the importance of fostering a supportive ecosystem for startups. Initiatives like "Startup India" aim to simplify regulations, provide tax benefits, and create a network of incubators and mentorship programs. These efforts, coupled with the determination and innovative spirit of Indian entrepreneurs, offer a ray of hope for the future of startups in the country.

While the challenges faced by Indian startups are numerous, they are not insurmountable. By developing innovative solutions, building strong teams, and capitalizing on government initiatives, these young businesses have the potential to become the engines of India's economic growth and global competitiveness.

CONCLUSION

Start-ups are a vital engine driving India's economic growth. They create jobs, foster innovation, attract investments, and contribute to a more competitive and dynamic economy. By addressing the challenges they face and nurturing a supportive environment, India can further harness the power of its start-up ecosystem to achieve its economic ambitions. As India marches towards a brighter future, start-ups are sure to play a pivotal role in shaping its economic landscape.

REFERENCES

1. Robert Fairlie. *"The Kauffman Firm Survey: Tracking Startup Activity and Growth."* (2016).
2. Ben Horowitz. *The Hard Thing About Hard Things: Building a Business When There Are No Easy Answers* (2018).
3. Nathan David. *The Startup Funding Manual: How to Raise Money and Grow Your Business* (2015).
4. Eric Ries. *The Lean Startup: How Today's Entrepreneurs Use Continuous Innovation to Create Radically Successful Businesses* (2019).
5. Martin Kenney and John Zysman. *From Silicon Valley to the Valley of Death: Localizing Innovation in the Global Economy* (2016).

Journal of The
The K.R. Cama Oriental Institute

Certificate of Publication

This is to certify that the article entitled

ROLE OF START-UPS IN THE GROWTH OF THE ECONOMY IN INDIA

Authored By

Suresh Prasad Yadav

University Grants Commission

Published in
Journal of The K.R. Cama Oriental Institute
ISSN: 0970-0609 (Print) with IF= 7.854
Volume No. 77 (November 2023)
UGC Care Listed Journal
Peer Reviewed, Refereed Journal

Published By
The K.R. Cama Oriental Institute

UGC
University Grants Commission

JOURNAL OF THE K.R. CAMA ORIENTAL INSTITUTE

Journal of the K.R. Cama Oriental Institute
ISSN: 0970-0609 UGC Care Group 1 Journal

ROLE OF U.N.O. IN PRESENT TIME

Rameshwar Prasad Rana

Assistant Professor, Department of Political Science, (Jhumri Telaiya Commerce College)

ABSTRACT

Formed in the aftermath of World War II, the United Nations (UN) emerged as a beacon of hope, aiming to foster international cooperation and prevent future global conflicts. Today, in an increasingly complex world grappling with numerous challenges, the UN remains a crucial player on the international stage, albeit facing its own complexities and requiring reform efforts to fully realize its potential.One of the core pillars of the UN's role in maintaining international peace and security. The Security Council, with its five permanent members wielding veto power, authorizes peacekeeping missions to stabilize conflict zones, offering a neutral presence and facilitating dialogue between warring parties. While the council's effectiveness is often hampered by geopolitical tensions and differing national interests, it represents a vital forum for addressing international security threats.Beyond conflict resolution, the UN plays a significant role in promoting sustainable development and tackling global issues. The organization advocates for human rights, spearheads initiatives to combat poverty and hunger, and provides crucial humanitarian aid in times of natural disasters or complex emergencies. The UN's Sustainable Development Goals (SDGs) set a comprehensive framework for addressing global challenges like climate change, inequality, and access to education, highlighting the organization's commitment to a more equitable and sustainable future for all.

KEYWORDS: United, Nations, Sustainable, Conflict

INTRODUCTION

Established in 1945, its core mission remains the same: to maintain international peace and security, develop friendly relations among nations, and to achieve cooperation in solving international problems of an economic, social, cultural, or humanitarian character. While its effectiveness and relevance are continuously debated, the UN's role in the present time is undeniable, adapting to address the ever-evolving challenges facing the global community.

One of the most crucial functions of the UN is its commitment to peace and security. Through the Security Council, the organization authorizes peacekeeping missions in conflict zones, deploys peacekeepers to monitor ceasefires and protect civilians, and mediates diplomatic solutions between warring parties. In the present, a world grappling with regional conflicts, the UN's role as a mediator and facilitator of dialogue remains essential. Its peacekeeping operations, despite limitations, provide a vital space for peacebuilding and stability in conflict-ridden regions.

One of the most pressing challenges is the resurgence of great power competition. The rise of new powers and the shifting balance of power between established ones have created a complex international environment where consensus-building, a cornerstone of the U.N.'s approach, becomes increasingly difficult. Issues like the ongoing war in Ukraine and the recent tensions in the Taiwan Strait highlight the potential for major powers to prioritize national interests over collective action, jeopardizing the U.N.'s ability to mediate conflicts and enforce international law.

Furthermore, the emergence of new threats such as cyber warfare, terrorism, and pandemics requires the U.N. to adapt its strategies and mandate. These non-traditional threats often transcend national borders and necessitate coordinated global responses. However, the U.N.'s structure and decision-making processes can be cumbersome and slow, hindering its ability to address these issues effectively.

Another significant challenge lies in the growing global inequality and the deterioration of human rights in various regions. While the U.N. plays a crucial role in promoting human rights and development, its effectiveness is often hampered by limited resources, lack of enforcement mechanisms, and resistance from member states with questionable human rights records.

The U.N. also faces the challenge of resource constraints. It relies heavily on contributions from member states, and funding shortfalls are a persistent issue. This hinders its ability to deploy peacekeeping missions, provide humanitarian assistance, and support development initiatives effectively.

Finally, the U.N. grapples with the issue of its own institutional limitations. Critiques point to an outdated Security Council structure that reflects the power dynamics of the post-WWII era, with veto power concentrated among a handful of permanent members. This raises concerns about the body's impartiality and its ability to represent the interests of the wider international community in the 21st century.

However, the UN is not without its critics. Some point to instances where the organization has been perceived as slow to react to crises or unable to enforce its resolutions due to the lack of a unified global will. The organization also faces internal challenges, including concerns over the veto power held by permanent Security Council members and the need for greater transparency and accountability in its operations.

Despite these criticisms, the UN remains the only truly global forum where all nations, regardless of size or power, can come together to discuss and address shared challenges. In a world increasingly interconnected and facing complex issues that transcend national borders, the UN's role in fostering dialogue, facilitating cooperation, and promoting global norms is more important than ever. As the organization undergoes reform efforts aimed at enhancing its effectiveness and legitimacy, maintaining and strengthening the UN remains crucial for building a more peaceful, prosperous, and sustainable future for all.

REVIEW OF RELATED LITERATURE

The U.N.'s continued relevance in the 21st century hinges on its ability to adapt to these challenges and maintain its role as a catalyst for global peace, security, and development.

While its core principles remain vital, the organization grapples with a rapidly evolving world, presenting significant roadblocks to fulfilling its mandate.[1]

Geopolitical Rivalries and National Interests: The resurgence of great power competition, particularly between the United States and China, often hinders the U.N.O.'s ability to take decisive action. Member states prioritize national interests over collective solutions, leading to frequent stalemates in the Security Council, where veto power by permanent members can paralyze critical decisions. This undermines the organization's effectiveness in addressing global crises like the ongoing conflict in Ukraine.[2]

Resource Constraints and Funding Shortfalls: The U.N.O. relies heavily on financial contributions from member states. However, these contributions are often inconsistent and insufficient to meet the organization's expanding needs. This lack of funding hampers its ability to deploy peacekeeping missions, provide humanitarian assistance, and support development programs effectively, leaving vulnerable populations exposed to further hardship.[3]

Evolving Threats and Non-Traditional Security Concerns: The nature of global threats has undergone a significant transformation. While traditional interstate conflicts remain a concern, the U.N.O. also faces challenges from non-traditional threats like cyberwarfare, pandemics, climate change, and transnational organized crime. These issues often transcend national borders and require coordinated international responses, which the U.N.O. is sometimes ill-equipped to orchestrate. [4]

Maintaining Legitimacy and Public Trust: The U.N.O. has faced criticism for perceived inefficiencies, bureaucratic hurdles, and a lack of transparency in its decision-making processes. This has eroded public trust in the organization, leading some to question its relevance and effectiveness in the contemporary world. Addressing these concerns and fostering greater transparency is crucial for the U.N.O. to maintain its legitimacy and public support.[5]

ROLE OF U.N.O. IN PRESENT TIME

The U.N.O.'s continued relevance in the 21st century depends on its ability to address these challenges effectively. By fostering greater cooperation, adapting to a changing world, and demonstrating its capacity to deliver tangible results, the organization can remain a beacon of hope in an increasingly complex and interconnected world.

Beyond its focus on security, the UN plays a critical role in addressing global challenges such as poverty, hunger, and climate change. The UN's specialized agencies, like the World Health Organization (WHO) and the Food and Agriculture Organization (FAO), work tirelessly to tackle these issues by providing vital resources, technical assistance, and coordinating international efforts. In a world facing interconnected challenges, the UN's ability to convene diverse stakeholders and foster global cooperation is crucial.

Furthermore, the UN serves as a champion for human rights and fundamental freedoms. Through various bodies, it monitors human rights violations, promotes fair and democratic elections, and advocates for the rights of vulnerable groups like refugees, women, and children. In the present, with rising global issues like human trafficking and forced displacement, the UN's role as a human rights advocate is more important than ever. Its work in promoting human dignity and holding states accountable for their human rights obligations contributes to a more just and equitable world.

However, the UN is not without its limitations. Criticisms regarding its bureaucratic structure, the veto power held by permanent members of the Security Council, and the challenges of implementing resolutions highlight the need for reform. Nonetheless, despite these limitations, the UN continues to play a unique and vital role in the present time. It serves as a platform for dialogue, fosters international cooperation, and addresses pressing global challenges that no single nation can tackle alone.

In conclusion, the United Nations, while not without its flaws, remains an indispensable organization in the present. As the world faces a complex web of challenges, the UN's role in facilitating peace, promoting human rights, and addressing global issues remains crucial. As the organization continues to adapt and evolve, its enduring mission of building a better future for all resonates more than ever in the present complex and interconnected world.

Formed in the wake of the Second World War, the United Nations (UN) has faced a constantly evolving international landscape. Its role in the present time remains crucial, despite criticisms and challenges. This paper will explore the ongoing relevance of the UN by examining its key functions and addressing contemporary issues it grapples with.

The UN's primary responsibility lies in maintaining international peace and security. Through its various organs, such as the Security Council and peacekeeping missions, the UN strives to prevent conflict, intervene in ongoing disputes, and facilitate post-conflict reconstruction. While the Security Council's effectiveness is often hampered by veto power held by permanent members, the UN's success in mediating conflicts and deploying peacekeeping forces to stabilize volatile regions cannot be discounted.

Beyond its security role, the UN champions human rights and sustainable development. It sets global norms and standards through conventions and declarations, and it supports individual nations in implementing these standards. Agencies like UNICEF and the World Health Organization (WHO)

deliver essential services in education, health, and humanitarian assistance, reaching millions in need. The UN's Sustainable Development Goals (SDGs) represent a collaborative framework for tackling pressing issues like poverty, climate change, and inequality.

However, the UN faces significant challenges in the contemporary world. The rise of populism and nationalism can hinder international cooperation and undermine its authority. The organization also grapples with accusations of bureaucracy and inefficiency, and powerful member states can sometimes use it to further their own agendas.

Despite these challenges, the UN's role remains indispensable. In a world increasingly interconnected and facing complex global issues, a forum for dialogue, negotiation, and collective action is more vital than ever. The UN provides a platform where nations can come together, share resources, and work towards solutions that benefit all.

In conclusion, the UN's role in the present time is multifaceted and critical. While it faces challenges and requires continuous reform, its dedication to peace, human rights, and development remains essential in building a more just and equitable world. As the organization evolves alongside the changing global landscape, its enduring goal of fostering international cooperation and promoting global well-being remains its most significant contribution.

The United Nations (UN), established in the aftermath of World War II, has faced a continually evolving landscape over the past seven decades. While criticism of its shortcomings exists, the current global climate presents the UN with unique opportunities to leverage its strengths and reassert its vital role in addressing pressing global issues.

1. Addressing Complex, Interconnected Challenges: The 21st century is characterized by a web of interconnected challenges, from climate change and pandemics to food insecurity and cyber threats. These issues transcend national borders and require coordinated, global solutions. The UN, with its diverse membership and established mechanisms for international cooperation, is uniquely positioned to facilitate dialogue, foster joint action plans, and mobilize resources on a global scale. The UN's Sustainable Development Goals (SDGs) serve as a potent framework for tackling these interconnected challenges, providing a shared roadmap for member states to collaborate towards a more sustainable and equitable future.

2. Leveraging Technology for Global Action: Technological advancements like artificial intelligence, big data, and communication platforms present significant opportunities for the UN to enhance its effectiveness. Big data analysis can inform targeted interventions in humanitarian crises, while AI-powered platforms can facilitate information sharing and collaboration between member states. The UN can leverage these advancements to improve the efficiency and reach of its operations, enabling it to better serve its member states and address emerging issues.

3. Fostering Inclusive Multilateralism: In an era of rising nationalism and populism, the UN's commitment to inclusivity and multilateralism is more important than ever. By providing a platform for dialogue and negotiation, the UN can bridge divides between nations and foster a sense of shared responsibility for addressing global challenges. This inclusive approach can help to build consensus, legitimize international interventions, and ensure that solutions to global problems are not solely dictated by powerful nations.

4. Building Trust and Promoting Peace: The current geopolitical landscape is marked by increasing tensions and regional conflicts. The UN's peacekeeping and peacebuilding efforts are crucial in mitigating these conflicts and promoting lasting peace. By strengthening its capacity to prevent conflicts, mediate disputes, and deploy peacekeeping missions, the UN can contribute to creating a more stable and secure world order. Additionally, the UN can leverage its platform to promote respect for human rights and the rule of law, which are essential foundations for peaceful and prosperous societies.

However, seizing these opportunities requires the UN to overcome ongoing challenges. The organization needs to adapt to the changing global environment, address criticisms of its effectiveness, and secure sustained support from its member states. By embracing transparency, accountability, and inclusivity, the UN can regain public trust and demonstrate its continued relevance in addressing the complex challenges of the 21st century.

Despite these challenges, the U.N.O. remains a vital platform for international dialogue and cooperation. To navigate the complex landscape of the 21st century, the organization must strive towards:

Reforming the Security Council: Addressing the power imbalances within the Security Council to ensure fairer representation and prevent individual nations from obstructing collective action.

Diversifying funding sources: Exploring alternative funding mechanisms, such as public-private partnerships, to reduce reliance on member state contributions and ensure consistent resource availability.

Adapting to evolving threats: Developing robust frameworks for tackling non-traditional security concerns and fostering international cooperation in addressing these critical issues.

Enhancing transparency and accountability: Increasing transparency in decision-making processes and holding member states accountable for their commitments to promote public trust and legitimacy.

CONCLUSION

The U.N. continues to be a critical platform for international cooperation and dialogue. However, navigating the complex challenges of the present era necessitates a renewed commitment to multilateralism, institutional reform, and innovative approaches to address the pressing issues facing humanity. Despite its limitations, the UN presents a crucial platform for international cooperation in a world facing increasingly complex and interconnected challenges. By leveraging its unique strengths, adapting to the evolving global landscape, and addressing its shortcomings, the UN has the opportunity to play a vital role in promoting peace, security, and sustainable development across the globe.

REFERENCES

1. United Nations: https://www.un.org/en/
2. https://www.mfa.gov.lv/en/united-nations
3. The United Nations and Global Governance: https://digitallibrary.un.org/record/472465?ln=en
4. The Future of the United Nations: https://www.brookings.edu/tags/united-nations/

Journal of The
The K.R. Cama Oriental Institute

Certificate of Publication

This is to certify that the article entitled

ROLE OF U.N.O. IN PRESENT TIME

Authored By

Rameshwar Prasad Rana

University Grants Commission

Published in
Journal of The K.R. Cama Oriental Institute
ISSN: 0970-0609 (Print) with IF= 7.854
Volume No. 77 (September 2023)
UGC Care Listed Journal
Peer Reviewed, Refereed Journal

Published By
The K.R. Cama Oriental Institute

UGC
University Grants Commission

JOURNAL OF THE K.R. CAMA ORIENTAL INSTITUTE

J.T.C.C KODERMA

N.S.S

PROGRAM REGISTER

Scanned with OKEN Scanner

(01) कार्यक्रम संख्या - 01 दिनांक 21/06/2023

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के तत्वाधान में दिनांक 21/06/23 को झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज करमा में योग कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

उपरोक्त योगा कार्यक्रम N.S.S. प्रोग्राम पदाधिकारी एवं प्राचार्य के देख रेख में सम्पन्न हुआ। जिसमें छात्र-छात्राएँ तथा शिक्षक-शिक्षकेत्तर कर्मचारी उपस्थित हुए। जो कार्यक्रम सम्पन्न होने के पश्चात् सभी सहभागियों ने प्रतिदिन योगा करने का संकल्प लिया।

~~उपरोक्त कार्यक्रम सम्पन्न कराने में योगदान~~

21/06/2023
Program Officer
N. S. S.
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma

21-6-23
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

शिक्षक शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का हस्ताक्षर

1. किशोरी प्रसाद
2. आरती कुमारी
3. Vijay Das
4. Dr. G.P. Diwakar
5. Amit kumar
6. Arvind Kumar Singh
7. Yugal Ram
8. Jagdish
9. Sunil Kumar
10. Madan Kr Rana
11. Sanjay kumar Sharma

योग दिवस दिनांक 21/06/2023

Sudhir yadav
Ganesh Kr Saw
Kundan Rajak
Anjali Saw
Mamta Kumari
Rani Kumari
Babita Kumari
Ravi Kr Yadav
Sonu Kumar
Lalita Kumari

(02) वृक्षारोपण कार्यक्रम दिनांक 20/07/2023 02

आज दिनांक 20/07/2023 को झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज, झुमरी N.S.S. इकाई द्वारा महाविद्यालय के परिसर में वृक्षारोपण किया गया।

इस कार्यक्रम में प्राचार्य सोहन यादव, कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो० रामेश्वर प्रसाद राणा, शिक्षक प्रो० मदन कुमार राणा, प्रो० अशोक स्वर्णकार, प्रो० अरविन्द कु० सिन्हा प्रो० युगलकिशोर साव प्रो० सुनील कुमार तथा एन. एस. एस. इकाई के स्वयंसेवकगण उपस्थित थे।

20.7.23
Program Officer
N. S. S.
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma

20.07.23
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

N.SS. ~~स्वयंसेवक के हस्ताक्षर~~
शिक्षक शिक्षकेतर कर्मचारियों का हस्ताक्षर

1 आरती कुमारी
2 किशोरी साव
3 Dr. G.P. Diwakar
4 [signature]
8 [signature]
5 Amit Kumar
6 [signature]
7 Yugul Saw
8. Sunil Kumar
9. Madan kr Rana
10. [signature]

वृक्षारोपण कार्यक्रम दिनांक 20/07/2023

1. Vikash yadav
2. Anju Kumari
3. Sanjay Kumari
4. Jyoti Kumari
5. Raju Kr yadav
6. Laxmi Kumari
7. Kajal Kumari
8. Pushpa Kumari
9. Sangita Kumari
10. Shaika Parveen
11) Raushani kumari
12) Puja Kumari
13. Riya kumari
14. Ravi Kumar yadav
15) Praveen kumar Sharma
16) Rahul Kumar
17. Zifra Praveen
18. Varsha Kumari

Varsha kumari
Aarzoo Parween
Sajiya Praween
Sonali Kumari
Sabina khatun

(03) वृक्षारोपण कार्यक्रम दिनांक – 26/07/2023

आज दिनांक 26.07.2023 को Meri Mati Mera Desh कार्यक्रम के अन्तर्गत, कारगिल विजय दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। महाविद्यालय परिसर में कारगिल विजय दिवस के अवसर पौधारोपण किया गया। प्राचार्य सोहर यादव एवं कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो० रामेश्वर प्र० राणा एवं आँवला वृक्ष को लगा कर कार्यक्रम का आरम्भ किये। उसके बाद स्वंय सेवकों के द्वारा 75 पेड़ वृक्ष को लगाया गया।

26.7.2023
Program Officer
N. S. S.
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma

26.7.2023
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

N.S.S. स्वंय सेवक के हस्ताक्षर

खुशी राणा
प्रिती राणा
सबिता राणा
शुभम कुमार राय
इस्लाम खान
Aman Khan
Sajan Khan
Sumit Kumar Sahu
Riya Kumari
Nisha Kumari
Abhish Yadav
A Kumar
[illegible]
Sachin pr. das
Sandhya Kumari
Lalita Kumari

शिक्षक शिक्षकेतर कर्मचारियों का हस्ताक्षर

रितेश श्रीवास्तव
Vijay Saw
आरती कुमारी
Dr. S. P. Diwakar
Amit Kumar
[illegible]
Yugal Saw
[illegible]
Sunil Kumar
Nadan Ho. Ram
[illegible]
[illegible]

Scanned with OKEN Scanner

वृक्षारोपण कार्यक्रम · दिनांक 26/07/2024
(Meri - Mati Mera Desh)

(1) Rahul Kumar.
2) Raja kumar
3) suraj saw
Raely yadav
sachin kr Rana
Sujit kr. yadav.
Rakesh Kumar
Satish kumar yadav
Mukesh kumar
Ritesh kumar yadav.
Ravi - saw
suraj pandit
shyamsundar kumar.
Varsha kumari
Sonam Soni
Varsha kumari
Zifra Praveen
Raja kumar Das
Sajiya Praween
Aarzu Parween

दिनांक - 04/10/2023

(4) अमृत कलश यात्रा

आज दिनांक 10/10/2023 को मेरी माटी मेरा देश के तहत अमृत कलश यात्रा कार्यक्रम का आयोजन झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज में किया गया। इस कार्यक्रम में कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो० कामेश्वर प्र० राणा NSS. एवं सभी शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारियों को पंच प्रण प्रतिज्ञा का शपथ दिलाई गई।

10.10

स्वयंसेवकों के हस्ताक्षर

Program Officer
N. S. S.
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma

10-10-2023

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Megha Kumari	Madan Kr. Rana.
Riti Kumari	Yugal Sav
Komal Kumari	Arvind Kumar Sahu
Priyanka Kumari	S. P. Yadav.
Rakhi Kumari	Ashok Kr. Swarnkar 10/10/23
Khushboo Kumari	Kishori Saw
Manisha Kumari	Vijay
Karan Kumari	Anurag Kumar
Rajan Kumar	(इन्दु आनंद)
Pankaj	Dr. G. P. Diwakar
Ajit Kr	Amit Kumar
Saloni Kumari	Arvind Kumar Sahu
Rani Kumari	Yugal Saw
Rupa Kumari	Aagras
Suganti Kumari	Sunil Kumar
Laxmi Kumari	
Nikam Kumari	
Anurag Kumar	
Suraj Kumar Das	
Prince Kumari	
Sweety Kumari	
Ajit Kumar	
Pankaj SHARMA	
Rohit Rana	
Jitendra Kumar	
Khushboo Sharma	
Manish Kumar	

10.10.23

Program Officer
N. S. S.
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma

10.10.23

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Scanned with OKEN Scanner

अमृत कलश यात्रा दिनांक 10/10/2023

1) Rahul Kumar
2) Raja Kumar
Sachin Kr Raja
Ravi Yadav
Suraj Saw
Rakesh Kumar
Sujit Kr. Yadav.
Ravi - saw
Satish Kumar yadav
Mukesh Kumar
Shyamsundar kumar.
Ritesh Kumar yadav.
Sonam Soni
Varsha Kumari
Suraj pandit
Zikra Praveen
Sajiya Parween
Varsha kumari
Aarzoo Parween
Rinku Kumar Das.
Sonali kumari
Sajima khatun

05

अन्तर्राष्ट्रीय एड्स जागरुकता दिवस 02/12/2023

आज दिनांक 02/12/2023 को 1 बजे अपराह्न महाविद्यालय परिसर में अन्तर्राष्ट्रीय एड्स जागरुकता दिवस पर प्राचार्य एवं ~~NSS~~ NSS पदाधिकारी द्वारा दीप प्रज्वलित कर प्रारम्भ किया। जागरुकता कार्यक्रम में महावि० के छात्र, छात्राओं, व्याख्याताओं एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों ने भाग लिया जिसमें एड्स के संक्रमण एवं इससे बचाव के लिये प्राचार्य सोहन यादव द्वारा प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम का संचालन NSS कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो० रामेश्वर प्र० राणा द्वारा किया गया इसके बाद प्रो० अशोक स्वर्णकार, प्रो० रामेश्वर प्र० राणा प्रो० अरविन्द कु० सिन्हा, प्रो० आरती कुमारी प्रो० कैलाश राणा प्रो० सुरेश प्र० यादव, प्रो० जुगल साव प्रो० एस० के० ठाकुर, प्रो० किशोरी साव, प्रो० अमित कुमार, प्रो० नुरूल्लाह अंसारी आदि सम्बोधित किया।

कार्यक्रम पदाधिकारी
Program Officer
N. S. S.
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma
02.12.23

प्राचार्य
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)
02.12.23

शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों का हस्ताक्षर

छात्र एवं छात्राओं का ह०

1 प्रो० जुगल साव
2 प्रमोद कुमार राणा
3 " Leeblal Rana
4 " अरविन्द कुमार सिन्हा
5 " Amit Kumar
6 " किशोरी साव
7 [signature]
8 Dr. Arun Kr. Singh
9 सुरेश प्रसाद यादव
10 आरती कुमारी
11 Vijay Das
12 Dr. G.P. Diwakar
13 Sunil Kumar
14 Amit Kumar
15 [signature]

अन्तर्राष्ट्रीय एड्स जागरूकता दिवस दिनांक 02/12/2023

Raja Kumar
Rahul Kumar
Sachin Kr Rana
Suraj Saw
Sujit Kr. Yadav
Rajan yadav
Satish kumar yadav
Rakesh Kumar
Ravi Saw
Mukesh Kumar
Pritesh Kumar Yadav
Shyamsundar Kumar
Suraj pandit
Sonam Soni
Vicky Kumar Das
Sudhir Kumar Das
Sonali Kumari
Sabina khatun
Ravi Kr Yadav
Sonu Kumar

(06) राष्ट्रीय मतदाता दिवस

आज दिनांक 08/12/2024 दिन मंगलवार पूर्वाह्न 10:30 बजे से महाविद्यालय परिसर में राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया गया जिसकी अध्यक्षता प्राचार्य प्रो० सोहर यादव एवं मंच संचालन एन० एस० एस० संयोजक प्रो० रामेश्वर प्रo राणा द्वारा किया गया। जिसमें महाविद्यालय के शिक्षक, छात्र - छात्राओं को ~~किया~~ मतदान के लिए जागरूक किए। इस मौके पर महाविद्यालय के शिक्षक - शिक्षकेतर कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

[signature] 08.12.24

संयोजक
एन० एस० एस०

Program Officer
N. S. S.
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma

[signature] 8-12-24

प्राचार्य

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

उपस्थित शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारी :-

1. अशोक कुमार कोठारी - [signature]
2. अरविन्द कुमार मिश्रा - [signature] 08/12/23
3. सुरेश प्रसाद यादव - [signature]
4. Dr. G.p. Diwakar - [signature]
5. Jeeblal Rana - [signature] 23/01/2024
6. Sunil kumar - [signature] 08/12/23
7. Arti Kumari - [signature] 23/01/24
8. Amit kumar - Amit kumar
9. Kailash Rana - [signature]
10. Dr. Arun Kr. singh - [signature]
11. जगदीश प्रसाद - [signature] 08/12/23
12. Nyamullah Ansari. - [signature] 08/12/23
13. K.P. Yadav - KP Yadav
14. K.K. Paswan - [signature]
15. Kishori Saw - [signature]
16. Anup Kumar Sinha - A kumar
17. Ramo Shanker Kumar - [signature]
18. Kirshna Prasad - कृ०प्र०
19. Sanjay Kumar Sharma - [signature]
20. Baidyanath Yadav - [signature]
21. पवन [illegible] - [signature]

राष्ट्रीय मतदाता दिवस दिनांक 23/01/2024

NSS इकाई 1/98

छात्र छात्राओं का हस्ताक्षर

(1) Arti Kumari
(2) Kajal Kumari
(3) Priti kumari
(4) Doli Kumari
(5) Shivani Kumari
(6) Shiwani Kumari
7) Khushboo Kumari
8.) Rubi Kumari
9) Pooja Kumari
10) Gayatri Kumari
11) Laxmi Kumari
12) Roushani Kumari
13) Manisha Kumari
14) Jyoti Kumari
15) Sulochna Kumari
16.) Viru das
(17.) Vishal kumar
18) Md altaf Khan
19) Gopal yadav.
20) Asif Raja
21) karan kumar das
22) Chandradeep kumar das
23 ARJU PRAVEEN
24 Somi Ali
25.) Sonali Kumari
26.) Priyanka Kumari
27) Khushboo Kumari
28) Shivani Singh
29) Kavita Kumari
30 Kusum Kumari
31.) Nandita Kumari
32). Mamta Kumari
33) Kajal Kumari
34.) Anju Kumari
35) Rubi Kumari
36.) Chandni Kumari
37) Arshi Praveen
38) Amrin Sahiba
39) Pushpa Kumari
40) Sweta Kumari
41) Riya Bharti
42.) Nisha Bharti
43) Abhishek Kumar
44) Md. Aftab

Scanned with OKEN Scanner

07 अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस दिनांक- 11/12/2023 09

आज दिनांक 11/12/2023 दिन सोमवार 01 बजे अपराह्न से महाविद्यालय परिसर में NSS के तत्वाधान में अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो० सोहर यादव एवं मंच संचालन NSS कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो० रामेश्वर प्र० राणा के द्वारा किया गया। जिसमें निम्न शिक्षक, शिक्षकेतर कर्मचारी तथा छात्र छात्रायें उपस्थित हुए। इसमें प्रो० अशोक कु० स्वर्णकार, प्रो० युगल किशोर साव, प्रो० अरविन्द कुमार सिन्हा, प्रो० किशोरी साव, प्रो० डॉ० अरुण कुमार सिंह, प्रो० मो० नुरुल्लाह अंसारी, प्रो० आरती कुमारी, प्रो० मदन कुमार राणा अपने अपने विचार व्यक्त किये।

[signature] 11.12.23
Program Officer
N. S. S.
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma

[signature] 11-12-23
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मियों का हस्ताक्षर

1 प्रो० युगल साव
2 " मदन कुमार राणा
3 " Jeelal Rana
4 " अरविन्द कुमार सिन्हा
5 " Amit Kumar
6 " किशोरी साव
7 [signature]
8 Dr. Arun Kr. Singh
9 सुरेश प्रसाद यादव
10 आरती कुमारी
11 vijay das
12 Dr. G. P. Diwakar
13 Amit Kumar
14 Sunil Kumar
15
16
17
18

Scanned with OKEN Scanner

अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस दिनांक 11/12/2023

Scanned with OKEN Scanner

NSS स्वयं सेवकों
छात्र छात्राओं का हस्ताक्षर

1. Arti kumari
2. Kajal Kumari
3. Priti kumari
4. Doli Kumari
5. Shivani Kumari
6. shiwani Kumari
7. Khushboo Kumari
8. Rubi Kumari
9. Pooja Kumari
10. Gayatri Kumari
11. Laxmi Kumari
12. Roushani Kumari
13. Manisha Kumari
14. Sulochna Kumari
15. Jyoti Kumari
16. Arju PRAVEEN
17. Somi Ali
18. Sonali Kumari
19. Priyanka kumari
20. Khushboo kumari
21. Shivani Singh
22. Kavita kumari
23. Kusum Kumari
24. Nandita Kumari
25. Mamta Kumari
26. Kajal kumari
27. Anju Kumari
28. Rubi Kumari
29. chameli Kumari
30. Arshi Praveen
31. Amrin Sahiba
32. Pushpa Kumari
33. Sweta kumari
34. Riya Bharti
35. Nisha Bhucchi
36. Abhishek Kumar
37. Md. Aftab

आज दिनांक 12/01/2024 दिन शुक्रवार को 9 बजे अपराह्न में महाविद्यालय परिसर में NSS के तत्वाधान में राष्ट्रीय युवा दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्राचार्य सोहर यादव एवं NSS कार्यक्रम पदाधिकारी संयुक्तरूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किये। ~~[illegible]~~ । कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य सोहर यादव एवं मंच का संचालन NSS कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो० रामेश्वर प्र० राणा द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में शि० शि० शिक्षक शिक्षकेत्तर, अभिभावकगण एवं छात्र छात्रायें उपस्थित हुए।

उपस्थित शिक्षक शिक्षकेत्तर कर्मचारी

(1) मदन कुमार राणा
(2) Jeebly Rama
3. श्याम किशोर [illegible]
4. डॉ० गाँधी प्र० दिवाकर
(5) Nasrullah Ansari
किशोरी साव
आरती कुमारी
vijay [illegible]
Dr. G.P. Diwakar
Amit kumar
Jagpal
Dr. Arun Kr. Singh
Sunil Kumar

[signature] 12.01.2024
Program Officer
N. S. S.
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma

[signature] 12-1-24
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Kodarma)

Scanned with OKEN Scanner

NATIONAL YOUTH DAY

CELEBRATING NATIONAL YOUTH DAY

DATE- 12.01.2024

Scanned with OKEN Scanner

[illegible]

1. Deepak Kumar.
2. Bably Kumar.
3. Suraj yadav
4. Pankaj Kumar Barnwal
5. Akash Kumar
6. Karan Kumar Malakar ( )
7. Amit kumar Ram
8. Rinku yadav
9. Akash Paswan
10. Dilip paswan
11. Chandan Kumar
12. Banti kumar
13. Vikas kumar
14. Mamta kumari
15. Santoshi Kumari
16. Komal Kumari
17. Priyanka Kumari
18. Archana kumari
19. lalita kumari
20. Jyoti - Kumari
21. Punam kumari
22. Nikita kumari
23. megha kumari
24. kajal kumari
25. Vikash kumar

(09) सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती 24.1.2024

आज दिनांक 24/01/2024 दिन बुधवार को 01 बजे अपराह्न से महाविद्यालय परिसर में NSS के तत्वाधान में सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य सोहर यादव किये तथा मंच का संचालन NSS कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो० रामेश्वर प्र० राणा किये। धन्यवाद ज्ञापन प्राचार्य सोहर यादव, प्रो० अरविन्द कु० सिन्हा, प्रो० जितेन्द्र राणा, प्रो० रामेश्वर प्र० राणा के द्वारा किया गया। इसमें अन्य शिक्षक शिक्षकेतर कर्मचारी तथा लगभग 40 छात्र छात्रायें उपस्थित हुए।

24.1.24
Program Officer
N. S. S.
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma

24-1-24
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

छात्र/छात्राओं का हस्ताक्षर-

1. Shivangi Kumari
2. Manisha Kumari
3. Sanju Kumari
4. Khushboo kumari
5. Sujata Kumari
6. Manika Kumari
7. Manisha Kumari
8. Mamta Kumari
9. Laxmi Kumari
10. Kajal Kumari
11. Shahnaz Khatoon
12. Madhu Kumari
13. Juli Kumari
19. Neha kumari
20. Pratima Kumari
21. Jyoti Kumari
22. Juli kumari
23. Bharti
24. Rohit kumar.
25. Rahul yadav
26. Manisha Kumari BA. Sem I His-onr
27. Pradeep kumar Yadav

शिक्षक शिक्षकेतर कर्मचारियों का हस्ताक्षर

Kishor Saw
आरती कुमारी
Vijay Das
Dr. G. P. Diwakar
Amit kumar
[signature]
Dr. Arun Kr. Singh
Sunil Kumar
Madan Kr. Rana

28. Md Arman Hussain
29. Aleef Kumar yadav
30. Rahul Kumar
31. Mahesh Yadav
32 Sujit Kumar
33. Ritu Kumar Singh
34. Mithlesh kumar
35) Sachin Kumar
36) Ayush Kumar
37) Pinku yadav
38) Akash paswan
39) Anita kumari
(40) Radha Kumari
41) Shiwani kumari
42) Shivanshu kumar
43) Aman kumar
44) Sumit kumar
45) Shyam Sundar kr.
(46) Raj Kumar.
(47) Krish Kumar
(48) Sahil Shekh
(49) MD. Samir
(50) Jishan Shekh
(51) Ashish kr Barnwal

सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती 24.01.2024.

Scanned with OKEN Scanner

10 अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस दिनांक 21/06/2024

आज दिनांक 21/06/2024 दिन शुक्रवार प्रातः 06 बजे महाविद्यालय परिसर में NSS के तत्वाधान में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्राचार्य सोहर यादव द्वारा किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विभिन्न प्रकार के योगासन एवं प्राणायाम करवाया गया। इस कार्यक्रम में प्राचार्य सोहर यादव, NSS कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो० रामेश्वर प्र० राणा, प्रो० अशोक कुमार स्वर्णकार, प्रो० अरविन्द कुमार सिन्हा, प्रो० मदन कुमार राणा, प्रो० सुरेश प्र० यादव, डॉ० जी. पी. दिवाकर, प्रो० किशोरी साव, प्रो० अमित यादव, प्रो० विजय वर्दिराज, श्री किशोर कु० पासवान, श्री कामेश्वर प्र० यादव, श्री बैजनाथ यादव, श्री संजय कु० शर्मा, श्री वकील सोनार, श्री कृष्णा प्र० यादव व जेनरल कर्मचारी एवं भारी संख्या में छात्र एवं छात्रायें उपस्थित हुए। प्रशिक्षक जगदीश प्रसाद केसरी द्वारा योग कराया गया।

21.06.24
Program Officer
N. S. S.
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma

21-6-24
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

कार्यक्रम में उपस्थित जनों का हस्ताक्षर

(1) अशोक कुमार स्वर्णकार 21/6/24
(2) मदन कु० राणा
(3) किशोरी साव
(4) सुरेश प्र० यादव
(5) अमित यादव
(6) किशोर कु० पासवान
(7) कामेश्वर प्र० यादव
(8) जगदीश प्रसाद
त्रिभुवन साहु
(9) [illegible]
(10) श्याम किशोर ठाकुर
(11) अरविन्द कुमार सिन्हा
(12) कृष्णा प्र०

Scanned with OKEN Scanner

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग करते हुए।

दिनांक 21.06.2024 दिन शुक्रवार को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग करते हुए।

JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE

Karma, Jhumri Telaiya, Dist.- Koderma- 825 409

(Affiliated to Vinoba Bhave University, Hazaribag)

Mob.: 8084375517
6204939110

Ref. No. .....

Date 07.03.2022

Today, on Dated, 07-03-2022 Students of B.A.LLB & L.L.B of Jharkhand Vidhi Mahavidyalaya Visited to Jhumri Telaiya Commerce College by the Student Exchange program. On this occasion the principal of the college Prof. Sohar Yadav Suggested student to be disciplined in the college. Student got opportunity to meet with the professors of J.T.C college and also got a chance to explore the classroom, lab and college campus.

The ended of the program was made in the seminar hall of the college Prof. Sohar Yadav, Prof. Kailash Rana, Prof. Madan Rana and Prof. Ashok Kumar Swarnkar inspired the student's by their knowledgeable words.

7-3-2022

Principal

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Scanned with OKEN Scanner

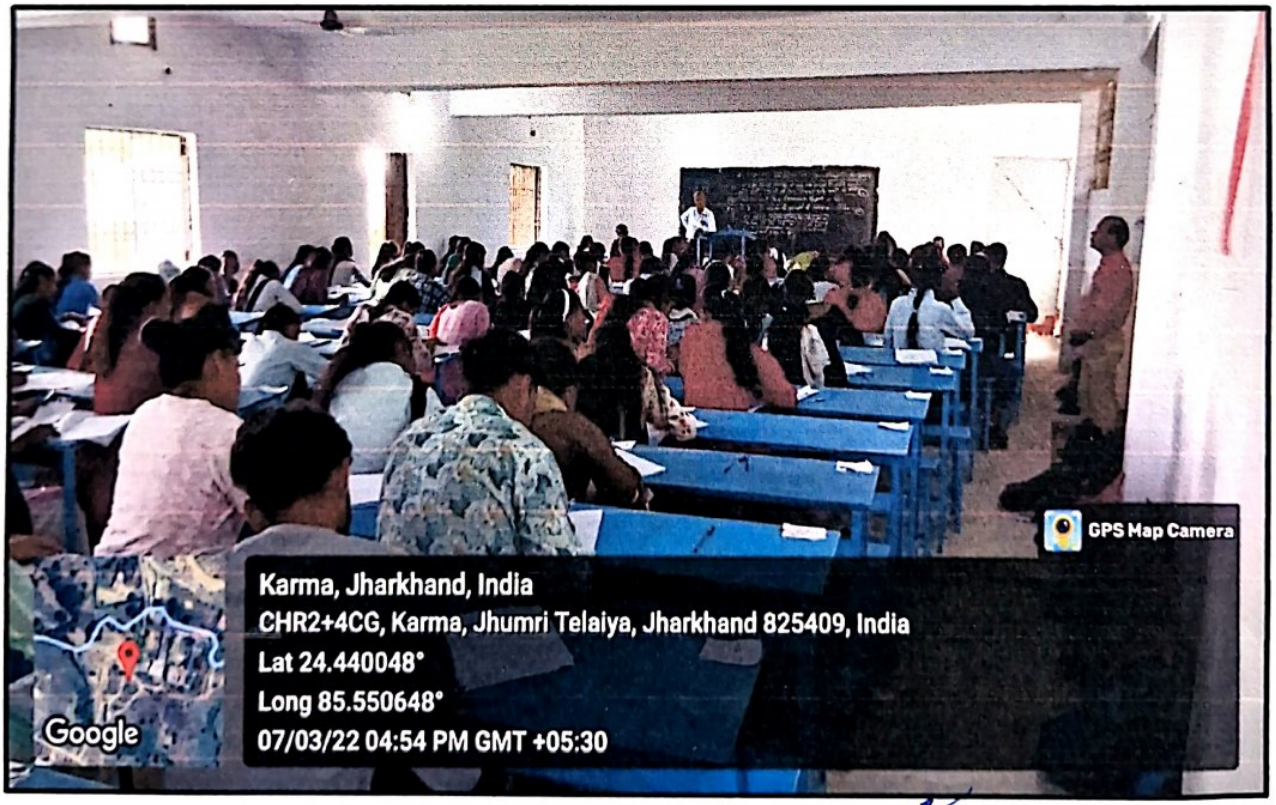

7-3-22

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Scanned with OKEN Scanner

JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE

Karma, Jhumri Telaiya, Dist.- Koderma- 825 409

(Affiliated to Vinoba Bhave University, Hazaribag)

Mob.: 8084375517
6204939110

Ref. No. JTCC/1864/22

Date 9.2.22

MEMORANDUM OF UNDERSTANDING

BETWEEN

JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE

Represented by Principal

AND

JHARKHAND VIDHI MAHAVIDYALAYA ,KODERMA

Represented Principal/ Secretary

This Memorandum of Understanding (MOU'S) is intended to promote cooperation between the Faculty of Education the JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE University of VBU, Hazaribag and JHARKHAND VIDHI MAHAVIDYALAYA,KODERMA the University VBU, Hazaribag both the represented by Principal and the Secretary recognizing the benefits to their respective college from the establishment of institutional links, hereby agree to enter into this agreement for the following purpose.

1. PURPOSE OF AGREEMENT

The purpose of this agreement is to develop academic and educational cooperation, establish a collaborative program in (indicate area of cooperation) between the two Colleges and to cooperate in their mutual interest for a range of higher educational activities.

2. AREAS OF COOPERATION

Subject to the availability of funds, resources and approval of the authorized representatives or Heads of the Institution of the JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE, and the JHARKHAND VIDHI MAHAVIDYALAYA ,KODERMA both institutions agree to develop the following collaborative activities Conducting joint research and development project.

9.2.22

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

9/2/22

Principal
Jharkhand Vidhi Mahavidyalaya
Jhumri Telaiya, Koderma (825409)

Scanned with OKEN Scanner

- Cooperation in individual projects
- Organization of lectures, symposia, international meetings, conferences and workshops
- Exchange of researchers and students
- Exchange of information, teaching materials, technological and scientific publications
- Providing opportunities for professors and researchers to give lectures
- Search for opportunities to collaborate in the future
- To share Laboratory facilities

3. IMPLEMENTATION

3.1 All programs or activities implemented under the terms of this Memorandum of Understanding shall be mutually agreed upon in writing, including the necessary budget for the program of activity as the need may arise.

3.2 Each of the participating institutions shall be fully responsible financially for the activities carried out under its direction or by its staff, except as otherwise agreed by the parties.

3.3 The parties will designate one officer each who will develop and coordinate specific programs or activities between them.

4. INTELLECTUAL PROPERTY

Intellectual property rights of work carried out at each partner institution shall normally vest with respective institution.

5. DURATION AND RENEWAL OF AGREEMENT

This Memorandum of Understanding will become effective immediately after signature by the representatives of both JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE, and the JHARKHAND VIDHI MAHAVIDYALAYA , KODERMA for a period of 3 Years and is subject to revision of modification by mutual agreement.

6. AMENDMENTS

6.1 This Memorandum of Understanding may be amended by a written agreement signed by the representatives of both College.

6.2 In the event of any unforeseen incident during collaborative activities in either country both College agree to negotiate a mutually acceptable solution.

9-2-22
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

9/2/2022
Principal
Jharkhand Vidhi Mahavidyalaya
Jhumri Telaiya, Koderma (825409)

Scanned with OKEN Scanner

6.3 Should any disagreement arise out of the application, interpretation or negotiate their implementation of this Agreement, the Colleges shall endeavour to exercise best efforts to differences.

7. TERMINATION OF AGREEMENT

This agreement may, at any time during its period of validity, be terminated by either party upon prior notice to the other in writing not later than 3 months before termination date, provided that such termination shall not affect the completion of any program or activity underway at the time the notice of termination is given.

8. APPROVAL

In agreement with the above terms of participation, the authorized representatives of the **JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE**, and the **JHARKHAND VIDHI MAHAVIDYALAYA , KODERMA both the University of V.B.U , Hazaribag** hereby affix signatures.

For: JHUMRI TELAIYA COMMERCE COMMERCE COLLEGE University Of V.B.U , Hazaribag.

9.2-22

Name and signature of representative

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Date: ....

झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज स्थापित–1984 करमा (कोडरमा) झारखण्ड

For: JHARKHAND VIDHI MAHAVIDYALAYA, KODERMA University Of V.B.U, Hazaribag.

Prof. Ajoy Bhattacharyya

9/2/2022

Name and signature of representative

Principal
Jharkhand Vidhi Mahavidyalaya
Jhumri Telaiya, Koderma (825409)

Date: 9/2/2022

JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE

Karma, Jhumri Telaiya, Dist.- Koderma- 825 409
(Affiliated to Vinoba Bhave University, Hazaribag)

Mob.: 8084375517
6204939110

Ref. No. JTCC/1656B/22

Date 8-2-22

MEMORANDUM OF UNDERSTANDING

BETWEEN

JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE

Represented by Principal

AND

JHARKHAND EVENING COLLEGE JHUMRI TELAIYA, KODERMA

Represented Principal/ Secretary

This Memorandum of Understanding (MOU'S) is intended to promote cooperation between the Faculty of Education the JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE University of VBU, Hazaribag and JHARKHAND EVENING COLLEGE JHUMRI TELAIYA, KODERMA the University VBU, Hazaribag both the represented by Principal and the Secretary recognizing the benefits to their respective college from the establishment of institutional links, hereby agree to enter into this agreement for the following purpose.

1. PURPOSE OF AGREEMENT

The purpose of this agreement is to develop academic and educational cooperation, establish a collaborative program in (indicate area of cooperation) between the two Colleges and to cooperate in their mutual interest for a range of higher educational activities.

2. AREAS OF COOPERATION

Subject to the availability of funds, resources and approval of the authorized representatives or Heads of the Institution of the JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE, and the JHARKHAND EVENING COLLEGE JHUMRI TELAIYA, KODERMA both institutions agree to develop the following collaborative activities Conducting joint research and development project.

8-2-22
PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Jharkhand Evening College

8/2/22
for Principal
Jharkhand Evening College
Koderma-825409

Scanned with OKEN Scanner

- Cooperation in individual projects
- Organization of lectures, symposia, international meetings, conferences and workshops
- Exchange of researchers and students
- Exchange of information, teaching materials, technological and scientific publications
- Providing opportunities for professors and researchers to give lectures
- Search for opportunities to collaborate in the future
- To share Laboratory facilities

3. IMPLEMENTATION

3.1 All programs or activities implemented under the terms of this Memorandum of Understanding shall be mutually agreed upon in writing, including the necessary budget for the program of activity as the need may arise.

3.2 Each of the participating institutions shall be fully responsible financially for the activities carried out under its direction or by its staff, except as otherwise agreed by the parties.

3.3 The parties will designate one officer each who will develop and coordinate specific programs or activities between them.

4. INTELLECTUAL PROPERTY

Intellectual property rights of work carried out at each partner institution shall normally vest with respective institution.

5. DURATION AND RENEWAL OF AGREEMENT

This Memorandum of Understanding will become effective immediately after signature by the representatives of both JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE, and the JHARKHAND EVENING COLLEGE JHUMRI TELAIYA, KODERMA for a period of 3 Years and is subject to revision of modification by mutual agreement.

6. AMENDMENTS

6.1 This Memorandum of Understanding may be amended by a written agreement signed by the representatives of both College.

6.2 In the event of any unforeseen incident during collaborative activities in either country both College agree to negotiate a mutually acceptable solution.

8.2.22

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Jharkhand Evening College Jhumri Telaiya Koderma

8/12/22

Principal
Jharkhand Evening College
Koderma-825409

Scanned with OKEN Scanner

6.3 Should any disagreement arise out of the application, interpretation or negotiate their implementation of this Agreement, the Colleges shall endeavour to exercise best efforts to differences.

7. TERMINATION OF AGREEMENT

This agreement may, at any time during its period of validity, be terminated by either party upon prior notice to the other in writing not later than 3 months before termination date, provided that such termination shall not affect the completion of any program or activity underway at the time the notice of termination is given.

8. APPROVAL

In agreement with the above terms of participation, the authorized representatives of the JHUMRI TELAIYA COMMERCE COLLEGE, and the JHARKHAND EVENING COLLEGE JHUMRI TELAIYA, KODERMA both the University of V.B.U , Hazaribag hereby affix signatures.

For: JHUMRI TELAIYA COMMERCE COMMERCE COLLEGE University Of V.B.U , Hazaribag.

8-2-22

Name and signature of representative

PRINCIPAL
Jhumri Telaiya Commerce College
Karma (Koderma)

Date: .....

झुमरी तिलैया कॉमर्स कॉलेज ★ करमा (कोडरमा) झारखण्ड ★ स्थापित–1984

For: JHARKHAND EVENING COLLEGE JHUMRI TELAIYA ,KODERMA University Of V.B.U, Hazaribag.

8/2/22

Name and signature of representative

Principal
Jharkhand Evening College
Koderma-825409

Date: 8/2/2022

Jharkhand Evening College ★ Jhumri Telaiya, Koderma ★

Scanned with OKEN Scanner